CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक क्षण में

2.2
291

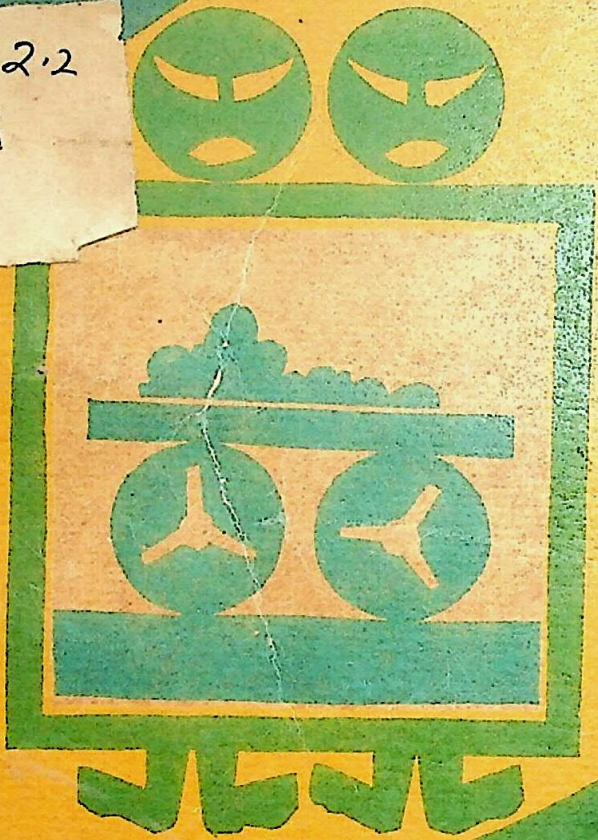

कृष्णानन्द कृष्ण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदरणीय श्री दंडीस्वामी विमलेश्वर
सरस्वती जी के
सादर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह देस में

[भोजपुरी-कहानी-संग्रह]

कृष्णानन्द कृष्ण

भोजपुरी-संस्थान
२, ईस्ट गार्डिनर रोड,
पटना—८०००० १

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह देस में

[कहानी-संग्रह]

लेखक । कृष्णानंद कृष्ण

●

प्रकाशक । भोजपुरी-संस्थान
२, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-१

●

सर्वाधिकार । लेखक

●

संस्करण : पहिलका : १९७५

●

आवरण-शिल्पी । श्री पी० चन्द्रविनोद

●

मूल्य । तीन रुपया पचीस पैसा

●

मुद्रक । सन्त-मुद्रणालय, कदमकुआँ, पटना-३

EH DES MEN. [A Collection of Short Stories in Bhojpuri]
By Krishna Nand Krishna.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकरे के—

जे हरमेस हमरा राह में रोड़ा बने के कोसिस कइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाकलम खास

—'एह देस में' हमार भोजपुरी कहानियन के पहिलका संग्रह ह, जवना में वर्त्तमान भारत के एगो साफ चित्र उरेहे के कोसिस कइल गइल बा।

—'एह देस में' के कहानियन का जरिए आज के समाज में सुरसा अइसन मुँह बवले बढ़त भ्रष्टाचार, महँगाई, बेकारी, भाई-भतीजाबाद आ एह समाज के नस-नस में भीनल सड़ांध के एगो साफ तसबीर खींचे के कोसिस कइल गइल बा।

—'एह देस में' के कहानियन के पढ़ला से ई साफ हो जाई कि हिन्दी-कहानी के सामान्य जन के, भा हमनी किहाँ के आम आदमी के, जेकरा के कुछ लोग सर्वहारा कहेला, सब सपना एह आजादी के सत्ताइस साल लमहर डगर तय करे में कइसे भरभरा के टूट गइल।

—'एह देस में' के कहानियन के बारे में दावा त ना, बाकिर हमरा अतना बिसवास बा कि एह संग्रह के कइगो अइसन कहानी बाड़ी सन जवना के हिन्दी समसामयिक कहानी आ भारत के कवनो भासा के कहानियन के साथे ऊँच पीढ़ा दिहल जा सकेला।

—'एह देस में' जवना रूप में रउरा सभे के हाथ में बा, ओकरा पन्ना-पन्ना प नेही लोगन के नेह छितराइल बा। मुख्य रूप से हम परमादरणीय श्री विश्वनाथ श्रीकृष्णजी के आभार मानतानी, जिनका प्रेरणा से लिखे के बिरवाई हमरा हिरदया में रोपाइल। ओकरा के काट-छाँट के सुघर बनावे में अगर सत्यनारायण नाटे आ चन्द्रेश्वर कर्ण कुशल शिल्पी के काम कइल लोग, त आदरणीय पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह जी, पांडेय नमंदेश्वर सहाय जी, पं० गणेश चौबे जी, श्री पांडेय कपिल, श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी, डॉ० स्वर्णकिरण, श्री भैरवनाथ पांडेय, श्री पांडेय सुरेन्द्र आ उनुकर छोट भाई श्री पाण्डेय चन्द्रविनोद, प्रो० ब्रजकिशोर, डॉ० वसंत कुमार, श्री तैयब हुसैन 'पीड़ित' आ सन्त-मुद्रणालय के मालिक श्री सन्त सिंह एह संग्रह के छितराइल कहानियन के एह संग्रह के कियारी में सजावे में अपना सुरुचि के जोग दिहल लोग। हम ऊपर लिखल सभ लोगन के आभारी बानीं।

पटना।

—कृष्णानन्द कृष्ण

१ जनवरी, १९७५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक का ओर से

श्री कृष्णानन्द कृष्ण के ई कहानी-संग्रह 'एह देस में' भोजपुरी-संस्थान, पटना के चउथका प्रकाशन ह। संस्थान के अध्यक्ष श्री पाण्डेय कपिल जी के कविता-संग्रह 'भोर हो गइल' आ श्री शारदानन्द प्रसाद के कविता-संग्रह 'पुरइन' संस्थान के पहिलका आ दोसरका प्रकाशन रहे, जवना के प्रकाशक का रूप में, एगो खास बग्रह से, 'ग्रंथ रत्नम्, पटना' के नाम छपल रहे। संस्थान के तिसरका प्रकाशन ह श्री सिपाही सिंह 'श्रीमन्त' के कविता-संग्रह 'जवानी के जगाइले'। 'एह देस में' के प्रकाशन से भोजपुरी-संस्थान भोजपुरी गद्य-साहित्य के प्रकाशन शुरू कर रहल बा। 'एह देस में' के प्रकाशन पर एकरा लेखक श्री कृष्णानन्द कृष्ण के संस्थान का ओर से बधाई।

—भैरवनाथ पाण्डेय
मंत्री
भोजपुरी-संस्थान
२, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-१

१ जनवरी, १९७५ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह देस में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह देस में

काल्हु जब ऊ दोबारा आइल रहे त हम घरहीं रहीं। केंवाड़ी के ढकचावल सुन के केंवाड़ी खोललीं त ओह घरी दुआरी प ओकरा के खाड़ देख के बड़ा अचरज भइल।

"—का बात बा ? हम पुछलीं।"

ऊ कुछ ना बोलल। हड़बड़ी में ठेलत ऊ हमरा के भीतरे ले आइल आ केंवाड़ी बन क के अपने सामने रखल सोफा पर लोंघडा गइल। ओकर एह तरह के हरकत पर मन खनुसाइल आवत रहे, बाकिर चुप रह गइलीं।

"—का बात बा ? बोलत काहें नइख ?"

—जानतार, काल्हु से सहर में एगो नया दरोगा आइल बा। बड़ा जालिम बा ससुरा। सउँसे सहर में घूम-घूम के धंधा करेवाला लोगन के धराई-पिटाई कर रहल बा। हउ कोना प के पानवाला के जानेल नू.....एही से सोचलीं हाँ कि चलि के तोहरा के पहिलहीं सजग कर दीं। ऊ डेराइल कहलस आ जाए खातिर उठ गइल।

"—बुझाता तू अधिका डेरा गइल बाड़।"

"नाहीं, भला हम काहें के डेराईं !"

आ ऊ दुआरी का ओरि बढ़ गइल। हम ओकरा के रोकल चाहत रहीं,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाकिर ई कह के कि घरवाली के तबियत ठीक नइखे, ऊ दुआरी के बाहर चल गइल।

ओकरा गइला के साथे-साथे बाबूजी के भुनभुनाहट सुरू हो गइल बा।

—देखु, हम तोरा के कई बेर कह चुकल बानीं कि ई आदमी हमरा बड़ा खतरनाक लागेला। तोरा अइसन-अइसन लखैरन आ लंठन का साथे ना रहे के चाहीं। आ कान खोल के इहो सुनि ले—काल्हु से अइसन-अइसन लोग खातिर एह घर के दुआरि बन।

ऊ हमरा के दोबारा कहलन।

हम उनुका बात के कवनो धेआन ना देलीं आ ई कह के कि रउआ चुपचाप आराम करीं; हर काम में दखल मत देल करीं; हम अपना कोठरी में चल अइलीं।

अब उनुकर बरबराइल अउरी तेज हो गइल बा। बुझाता, माइयो के बोला लेले बाड़न। काफी लंबा-चौड़ा हाँक रहल बाड़न। माई चुपचाप बइठल होई। आखिर उहो का करो। उनुकर आवाज अब अउर तेज भइल जात बा। बेर-बेर हमार नाँव ले के गारी देत बाड़न। हम सब कुछ सुनियो के अनजान बनल अपना कोठरी में बइठल बानीं। अब जसवंता के नाँव ले के गारी देत बाड़न। हम सोचीला, जसवंता त हमरा से लाख दरजा बढ़ियाँ बा। आ हम आजु जवन कुछ बानीं, खाली एही लोग खातिर।

जसवंता ठेला प फल के दोकान कहले बा। भोरे आठ बजे से रात खा आठ बजे ले अपना ठेला के साथे ऊ टीसन पर रहेला। ओकरा से हमार जान-पहचान ओह घरी भइल रहे जब ऊ दानापुर में आर० पी० एफ० के सिपाही रहे। अइसे पढ़े-जिखे के नाँव पर त समुझीं कि करिया अछर भइँसे बरोबर बा, बाकिर कसहूँ दसखत क लेला। ए सबके बादो ऊ बड़ा होसियार आदमी बा। एही के चलते ऊ अपना गाँव के बहुते लोगन के नोकरी दानापुर 'लोको' में धरा देले बा।

ओह घरी हम बेकार रहीं। दिन-दिन भर आफिसन के चक्कर काटीं। दउरीं-धूपीं। बाकिर सब बेअरथ। ओहू दिन, दिन भर आफिसन के दुआरि धाँग के लवटल रहीं—भुखाइल-पिआसल। अबहीं कपड़ो ना निकलले रहीं। तले बाबूजी के बमकत बोली सुनाइल। ऊ माई से कहत रहन—"अगर अतना पइसा कहीं घूरो प फेंक देले रहितीं त घूरो ऊंच हो गइल रहित। ई ससुरा, दिन-दिन भर लखैरा अइसन घूमल फिरत बा। बी० ए० का पास क गइल, बुझाता जे लाट के नाती हो गइल।"

माई चुपचाप बइठल होई। कबो-कबो उनुकर मन राखे खातिर उनका हँ में हँ मिला देले। उहो का करो! कवनो उपायो त नइखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पता ना, ओह दिन उनुका का हो गइल रहे। ऊ अनाधुन बोलत जात रहन। ओह दिन उनुकर आवाज एकदम काटे धउरत रहे। मन में आइल कि जा के कह दीं कि हमार हिस्सा दे के हमरा के अलगा क द। आ कर मउज। हमहूँ आपन देखि लेब। इहाँ त अउर रामराज बा। ना जोरू ना जाँता। कर छुट्टी अ। खतम होखे ई रोज-रोज के बखेड़ा। बाकिर ई सोच के चुप रह गइलीं कि अबहीं कहला से कुछ होई-जाई ना, उल्टे एगो बखेड़ा खड़ा हो जाई। पिआस लागल रहे, से मुन्नी के हाँक लगा के अपने पलँग प सूत रहलीं।

मुन्नी अबहीं ले ना आइल। उहो कहीं कोना में गुलटिआइल सूतल होई। अइसे हमरा खूब इयादि बा, जब कबो एह तरह के बात घर में होला—घरे के सबलोग हमरा से बोलल छोड़ देला। केहू भर मुँह बोलबो ना करे। आ हमरा अपना घरे में 'तनहाई' के सजाइ काटे के पड़ेला। ओहू दिन इहे भइल। मुन्नी ना आइल। हमरा बुझाता, जइसे घरभर के लोग हमरा खिलाफ कवनो चाल चल रहल बा। हमहूँ कुछ ना बोललीं, चुपचाप सूतल रहलीं। आ मने मन घर छोड़े के फैसला क लेलीं। घर छोड़े के फैसला कइला का बाद बुझाइल जे हमरा कपार प से एगो बड़हन बोझा उतर गइल।

ओह दिन अनमुनाहे उठ के जसवंता का इहाँ गइलीं। ओकरा दुआर प गइला प पता चलल कि ऊ फराकित होखे गइल बा। हम ओकरा दुआर प बइठ गइलीं। थोड़े देर में ऊ हाथ में लोटा आ दतुवन ले ले आइल। अलगे से देख के ऊ कहलस "—का रे छोटका, सुनलीं हाँ कि तें ग्रेजुएट हो गइले रे! मिठाई-आठाई खिअइबे कि ना?"

हम बइठका से उठ के ओकरा लगे चल गइलीं। ओकरा लगे जाके हम आपन सब हाल कह देलीं। कुछ देर ले चुप रहला का बाद ऊ हमरा से कहलस—'जब तें कवनो काम करेला तइयार बाड़े त काल्हु तइयार होके टीसन पर चले खातिर अइहे।'

हमार ओकर जान-पहचान ओही दिन का बाद से अउर बढ़त गइल। हमरा के ऊ टीसन पर कुली के काम दियवा देलस। हम जसवंते का साथे, ओकरे कोठरी में रहे लगलीं। दिन भर टीसन पर माल चढ़ाई-उतारीं। रात खा आके कोठरी में लोंघड़ जात रहीं। अब ई हमरा जिनगी के रोज-रोज के उठवना बन गइल रहे।

कबो-कबो जब ऐनक में हम चेहरा देखीं त आँखिन का कोर से लोर के लड़ी टूटे ना पावे। मुँह के सवाद कसाव हो आवत रहे। मन करे जे पेटी में से बी० ए० के डिग्री निकाल के टुक्की-टुक्की क के फेंक दीं। एहिजा त ओकर कीमत रद्दियो कागज भर नइखे। आ मन उदास हो जाय। एही बीच जसवंता के बदली दोसर सहर में हो गइल। हम फेरु अपना कोठरी में अकेले रह गइलीं—एकदम अकेले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिन भर टीसन प काम करीं आ रात खा आके चुपचाप सूत रहत रहीं।

अब घरे रोपेआ भेजे लागल रहीं। कबहीं-कबहीं घरे चलियो जात रहीं। बड़ा खातिर होत रहे। माई बेर-बेर हालचाल पूछे। खूब खुस होखे। मुन्नी त देखते चहके लागत रहे। भइया अबकी हमरा के ओढ़नी आ रीबन ना ले अइब त तोहरा से कट्टिस कर लेब। .....सुन के हम चुप लगा जाइला भा एगो बिहइल हँसी हँस के रह जाइला। .....आ ठीके त बा, ओकरा का मालूम ? ओकरा त सामान चाहीं।

हमार काम अब बन्हल-बन्हावल चाल में चलत रहे। एक दिन एगो मारवाड़ी बाबू के सामान पारसल में लादत रहीं त ऊ हमरा बात से बड़ा परभावित भइले। ओकर नतीजा ई इल कि हमहूँ पारसल होके उनुका साथे आसाम चल अइलीं। एहिजा जवन काम हमरा मिलल ओकरा साथे-साथे मोट दछिनो रहे। पहिले हमार मन हिचकल। बाप रे बाप ! ई त देस का साथे गद्दारी कइल होई। ईमान काँप उठल। मन भइल जे फेंक दीं ई कुल्हि लव्बदर आ चलीं फेरू कुलिये के काम करीं। बाकी एक ओर पइसा के लोभ आ दोसरा ओर सुरसा अइसन मुँह बवले बेकारी, भ्रष्टाचार, महँगाई आ भाई-भतीजावाद के इयादि पड़ते मन मसुरा के रहि गइल। त आखिर का करीं ? मन के भीतर बइठल करिया साँप फन फुफुकारत कहलस—"चोन्हर कहीं के, आखिर ईमानदारी के बदला का मिलल बा, आजुल तोरा। एह देस में गरीबी, अशिक्षा आ महँगाई के सिवाय का मिलल बा। आ जहाँ ले गद्दारी के बात बा, गद्दार का साथ गद्दारी कइसन। काम करबे पइसा लेबे, तोरा कवनो मुफुत में थोड़े मिली।" —आ हमरा बुझाइल जे बात ठीक बा। एकरा बाद हम तन-मन-धन से आपन काम करे लगलीं। अब घरे कुछ जादे रोपेआ भेजीं, एहसे ओहिजो लोग बहुते खुस रहत रहे।

आसाम से जब हम आपन दोकान-दउरी अलग क के लवटलीं त टीसन का बहरी अइला प हमार नजर सबसे पहिले जसवंता प पड़ल। ऊ एगो फलवाला ठेला का पाछा खाड़ रहे। ओकरे के देख के हम ओकरा पासे गइलीं। पुछला पर पता चलल कि ई दोकान ओकरे ह। ऊ इहो बतवलस कि कहसे हमरा आसाम गइला का बाद ओकरा के नोकरी से निकाल देल गइल। तबे से ऊ फल बेचे के काम करत बा। ई सुन के हम भीतरे-भीतर बड़ा खुस भइलीं। काहें कि अबहीं त हमरा एगो बिसवासी आदमी के जरूरत रहे आ जसवंता एह घरी ओह कसउटी पर खरा उतरत रहे। एह से हम ओकरा के खुस करे खातिर सरकार के भर पेट गारी देलीं। ओकरा दोकान से दू किलो सेवो खरीदलीं। चले का बेरा कहलीं—जसवंत भाई, अगर तोहरा आजु चाहे काल्हु फुरसत होखे, त हमरा घरे अइह, कुछ काम बा। आ घरे चलि देलीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घरे अइला पर हमार खूब खातिर भइल। बाकिर जब ओह लोग का ई मालूम भइल कि अब हम आसाम ना जाइब त सबके मुँह अइसन लटक गइल। माई हमरा से बोलल कम क देले रहे। आजु मुन्नियो ना आइल हा, बाबूजी के रामायनो सुन्ह हो गइल रहे। हम जानत रहीं, ओहमें ऊ हमरा के आवारा, लंठ, लखैरा एही सब उपाधिन से विभूषित करत होइहें। उनुकर रामायन पाठ एकसुरिए बे-रोकटोक के चलत रहे। हम रात-भर, दिन-भर के थाकल-खेदाइल रहीं, चुपचाप सूत गइलीं। मन में सोचलीं—अबहीं टोकला से काम गड़बड़ा जाई आ रात में एगो बखेड़ा खाड़ हो जाई। इहे सोच के हम चुप रह गइलीं। आ हमरा बुझाइल जे हम फेर अकेले रह गइल बानीं—एह भँवर-जाल में।

दोसरका दिन साँझ खा जसवंता घरे आइल रहे। हम ओकरा के सब बात समुझा के कह देलीं। हमार बात सुनि के ऊ कुछ देर ले चुपचाप बइठल रहे। हम फेरू उसकबलीं। एह बेरा ऊ कुछ भारी आवाज में बोलल—जानतारे छोटका, पता ना कवना पाप का चलते नोकरी छूअल आ ई! बाप रे बाप! ई त देस का साथे गद्दारी कइल होई।

हम कहलीं—अच्छा जसवंता, ई अतना तरफदारी काहे खातिर। आजु ले आजादी के एह लमहर सताइस बरिस में, हमनी का मिलले का बाटे—खाली गरीबी, महँगाई, भ्रष्टाचार। ई देखे खातिर केहू काहें नइखे आवत कि हमनीं के लइकन के दूध के दरसन नइखे होत आ दोसरा ओर कोरा में घूमत झबरी कुतिया के रोजे दूध पिआवल जात बा। आखिर, अइसन काहें होत बा! हमार बात मान। फेंकु हई लबदर आ चलु हमरा साथे। जहँवा सभे चोरे होखे ओहिजा के केकरा से डेराई। ओह दिन हमरा समझवला के ओकरा प काफी असर भइल आ जसवंता अब हमार 'बिजनेस पाटनर' बन गइल रहे। अब ऊ रोज दोकान जात खा आके माल ले जाला आ साँझ खा आके हिसाब दे जाला। एने देखलीं हाँ, अब ऊ अधिका खुस रहे लागल बा। आ काम में त अतना होसियार हो गइल रहे कि हमरा कुछुओ काम ना करे के परत रहे।

बाबूजी के रामायन-पाठ अबहीं बन ना भइल रहे। अब त पूरा अरथ का साथे पाठ करत रहन। माई से खूब तेज आवाज में कहत रहन—"जानतारू अइसन-अइसन दू कउड़ी के आदमी अगर हमरा घरे आवे-जाए लागत त कालहु से सादियो-बियाह बन हो जाई। माई बइठल चुपचाप सुनत होई।

बाबूजी कहले-"कम से-कम तूँ तनो अरना दुनहुआ के समुझा द। काहें सत्यानास प तुलल बाड़े।

बुझाता माई हुँकारो भर देलस। अइसन ओकरा चुप्पी से बुझाता। सोचतानीं, अतना डेरइला से अब काम ना चली। चल के साफ-साफ कह देवे में कवनो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरज त नइखे। आखिर हम जे कुछ कर रहल बानीं, एही लोग खातिर।

माई के अपना ओर आवत देख के चुप हो जातानी। मन में सोचतानी कि माइए से सब बात कह देब। माई आके पलँग पर बइठ गइल बिया। कुछ देर ले कोठरी में एगो अनचिन्हार चुप्पी कोठरी के आँतर-पाँतर में पसर गइल बा। बुझ'ता जइसे हमनीं एक दोसरा के चिन्हते नइखीं। तबहीं हमरा बुझाइल जे ई लोग कतना पराया हो गइल बाड़े।

माई कोठरी में पसरल चुप्पी के तूरत कहलस—"बेटा, बाप के बात काहें नइख मान लेत। काहें अपना जिद प अड़ल बाड़।"

माई के मुँह से अइसन बात सुन के खीस में सउँसे देह जर गइल। हमहूँ रानी ठेठि आवाज में कहलीं, जेमें ई बात बाबुओजी का कान में पहुँच जाय—माई, एह घर के सउँसे टीम-टाम ओही अदना आदमी प टिकल बा। अउर त अउर, सबसे बड़ बात बा कि ऊ हमरा बिजनेस के हिस्सेदार बा। ओकरा ना आवे के मतलब जानतारू ? काल्हु से हँड़िया कइसे चढ़ी, ओकरा खातिर सोचे के परी। आ जहाँले सादी-बियाह बन होखे के बात बा, दुनिया पइसावाला के कदर जानेले। जेकरा पाले पइसा नइखे, ओकरा सतबादी भइला के कवनो कीमत नइखे। पास में पइसा रहला प सब कुछ छिप जाला। जहाँ ले सत्यानास करे के बात बा, हम ना, ऊ अपने काछा भीर के तइयार बाड़े।

माई कुछ ना बोलल। हमरा बुझाइल जे हमार बात सुन के ऊ काफी डेरा गइल बिया। आ फेरू एक छन खातिर हमरा कोठरी में कूहा-अइसन घनघोर चुप्पी पसर गइल बा। पलँग से उतरत माई कहलस—बबुआ, हम कुछ नइखीं कहत। तें जइसन बूझ ओइसन कर। तें अब कवनो जनमतुआ नइखस नूँ। आ माई कोठरी से बहरी चल गइल। हम फेरू कोठरी में अकेले रह गइलीं। कोठरी में पसरल चुप्पी अब हमरे के काटे लागल बा। सामने देवाल पर एगो हिन्दुस्तान के नकसा टाँगल बा। बहुत पुरान ना ह, बाकिर कई जगह से उड़ गइल बा। उड़े के के कहो कतहीं-कतहीं दरकियो गइल बा। पंखा चल रहल बा। पंखा का हवा से नकसा फड़फड़ा रहल बा। हमरा भीतरे बड़ा बेचैनी मालूम देता। .....तबहीं जसवंता के इयाद आवते बुझाइल कि अबहीं ई कुल्हि सोचे के टाइम नइखे। आखिर खाली हमरे सोचला से का होखी, जब सबलोग गलते होखे। आ अब त सबसे बहादुरी के काम बा इहाँ आदमी बन के जीयल। भला एह सैतानन के झुंड में एह एक अदद आदमी के का होई। लोग गीध अइसन ओकर गुरिया-गुरिया नोच लीही। तब त अच्छा बा कि सैताने बन के जीयल जाव।

बहरी चारू ओर अन्हरिया पसर गइल बा, जे छने-छने अउरू करिया होत जा रहल बा। हम मन में सोचलीं कि चलीं, चल के जसवंता के समुझा दीहीं, काहें कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ बहुत डेरा गइल बा। कहीं अइसन ना जे काल्हु अइबे ना करे। आ हम ओकरा हीं जाए खातिर तइयार होखे लगलीं।

कुछ दूर गइला पर सोचलीं—चलीं तनी थाना से होत चलीं। आ हमार पैर अपनहीं थाना का ओर बढ़ गइल। सिंहजिउवा बड़ा अच्छा आदमी रहे। पता ना ई कइसन बड़ू ए। इहे कुल्हि सोचत हम दरोगा के बइठेवाला कोठरी का सामने पहुँच जात बानीं। बहरी खाड़ सिपाही से नयका दरोगा के नाँव जान के कवलेज के एगो पुरान साथी के धूमिल चेहरा के इयाद आवत बा। बुझाता, उहे ह। आ ऊ होखे चाहे ना, हमरा त हर हालत में भेंट करे के बा। आ हम परदा उठा के कोठरी का भीतर घुस जात बानीं। बड़ी देर ले एने-ओने के बात बतिया के हम फेरु दोसरा दिन भेंट करे के कह के थाना का बहरी आ गइलीं। आ अपना के सड़क पर धउरत गाड़ियन का भीड़ में खो देत बानीं।

रात के अन्हार अउरी गहिर होत जात बा। हम अबहीं ई फैसला ना कर पवलीं हाँ कि पहिले कहाँ चलीं—अड्डा प कि जसवंता किहाँ। एही दोपाहीं में परल आगे बढ़ल जात बानीं। मन में सोचलीं, जसवंता त बहुत डेराइल बा। हो सकता, आवे में आना-कानी करे, चाहे कवनो बहाना बना दे। एह से हम सोचलीं कि पहिले अड्डा प चल के माल ले लीं आ ओकरा घरे जा के माल दे देब।

आखिरी फैसला के बाद हमार पैर अड्डा का ओर अनाधुन बढ़ रहल बा। रात जवान हो गइल बा। एह गली में बिजुली के लाइनो अबहीं ले नइखे आइल। साइत रजत-जयन्तियो में घूट गइल हा। अइसे, हमरा अइसन धंधा करेवाला आदमी खातिर बढ़ियाँ बा। कुछ दूर आगा गइला पर कोठरी का सामने केहू के बइठल देख के सक भइल। पाकिट से टॉर्च निकाल के देखलीं—जसवंता ओठंग के बइठल बा। हमरा ई बिसवास ना भइल कि जसवंता ह। एह से फेरु एक बेरा टॉर्च जरा के देखलीं तब जाके बिसवास भइल। आ हम तेजी से चल के कोठरी का भीरी पहुँचलीं।

—"जसवंता, तें अबहीं खा एहिजा!"

—"हँ छोटका, हम जानत रहीं, तें इहाँ जरूर अइबे।"

हम कोठरी खोल के भीतर घुस जात बानीं। साथे-साथे जसवंतो। हम जसवंता के माल थम्हावत कहलीं—हम त समुझले रहीं कि तें बहुत डेरा गइल बाड़े।"

—अरे छोटका, हम काहें के डेराईं। हई केस उजर कवनो धाम में नइखीं कइले।

—"एगो बात अउर बा। ई दरोगा त हमार आपन संघतिया बा।"

—"एह से कवनो बात नइखे। नाहिंयो रहित त हम सब ठीक क लेतीं। काहे कि एह देस में त सब कुछ चलेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुदिन का इन्तजारी में

'शिफ्ट' खतम होखे के भोंपू बाजते ऊ टेढ़-मेंढ़ गली आ मुनस्पेल्टी के मैदान से होत रोजे बिना कवनो नाकुर-नुकुर के इहाँ पहुँच जाला। अइसे 'वर्कशौप' से निकल के सीधे पक्की सड़क घ के इहाँ पहुँचल जा सकेला। पता ना काहें, ऊ आजु ले एह सड़क से कबहीं ना आवे-जाय। ऊ हरमेस एही टेढ़-मेंढ़, लमहर आ गंदा गली से आवेला-जाला। शायद एह डर से कि इहाँ आवत-जात ओकरा के केहू देख ना लेबे।

आजुओ 'शिफ्ट' खतम होखे के भोंपू बाजते ऊ सीधे उहाँ से इहाँ पहुँच गइल। इहाँ आवते-आवत ओकर धेआन पहिले कोना में का खलिहा कुरसी आ टेबुल प पड़ल। ऊ सब अबहीं ले ना आइल रहन स। ई सोच के कि ऊ थोरहीं घरी में चल अइहन स, ऊ चुपचाप टेबुल के पास पड़ल खलिहा कुरसी खींच के बइठ गइल। समय काटे खातिर ऊ अपना पाकिट से बीड़ी आ सलाई निकल के बीड़ी धरा लेलस। आ पर्वे-गर्वे कस खींचे लागल। धुआँ के बनत-बिगड़त छल्लन में बनत-बिगड़त चेहरन के देख के ओकर मन कइसन दो हो गइल। ऊ ओह सब बातन पर सोचले छोड़ देलस। बाकिर बेर-बेर ओकरा आँखिन का आगा कइ-कइ गो चेहरा नाच जात रहे। एने कई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिन से ओकरा लागत बा कि गवें-गवें ओकर सोचे के सक्ति कम हो रहल बा। अइसन बिचार मन में आवते ऊ भीतरे-भीतरे बड़ी दूर ले काँप गइल। ऊ बीड़ी के एगो लमहर कस खिंचलस आ बीड़ी के अधजरल ठूँठ के टेबुल से रगर के ओकरा के पाकिट में रख लेलस।

"..... भाइयो !.....मजदूरो ! और किसानो !.....बेकार नौजवानो ! ..... कल लाखों की तादाद में जमा होकर अपने क्रांतिकारी नेता का भाषण सुनें .....!"

कुरसी प बइठल-बइठल ऊ एक नजर दुआरी का ओर डललस। केहू के आवत ना देख के ऊ चुपचाप अपना कुरसी प इतमीनान से बइठ गइल। माइक के आवाज अउर निगिचा आवत जात रहे। ऊ मने-मन खूब गारी देलस। साले नेता के भासन होई। इहाँ खटत-खटत रगे-रगे ठेला पर गइल, डाँड़ टेढ़ हो गइल.....इहो साला सब खूबे हरियरी देखावेलन स आ खूब दुहिहें स—गाय अइसन।.....आ लोग ! लोगो के मत कहीं ! लोग त परतिग्या क लेले बा जे कपार फूटो त फूटो बाकिर तमासा जरूर देखब।

—बाबू।

होटल में काम करेवाला लइका के आवाज सुनिके ओकर धेआन टूटल।

—का ले आईं ?

अवहीं ठहर। आ ऊ फेरु एक नजर दुआरी का ओर डललस। दुआरी प बिरसा के ऊ आवत देखलस। बिरसा के आवत देख के ओकरा कुछ तसल्ली भइल। ऊ अपना कुरसी प तनी गम्भीर हो के बइठ गइल। पाकिट से अधजरल बीड़ी निकाल के धरा लेलस। बिरसा अबले टेबुल का नगिचा आ गइल रहे। ऊ बीड़ी के एगो लमहर कस खिंचलस आ बीड़ी के ठूँठ बिरसा का ओर बढ़ा देलस।

".....भाइयो ! अगर आप मजदूरों का सहयोग मिला, तो हम इस सड़ी-गली व्यवस्था को बदल देंगे। और....." माइक के आवाज फेरु ओकरा कान से टकराइल।

बिरसा खूब निचिंत हो के बीड़ी पीअत रहे। ऊ बिरसा का ओर देखलस। साले व्यवस्था के बदल दी लोग। ठग ल लोग। आ ओकर हाथ अनियासे दाढ़ी में होत उजर बालन पर चल गइल। ऊ बिरसा से कहलस—"जानतारे, अब हमनीं के दीन-दसा अउर खराब होत जाई।"

—हँ ! अइसे हमनीं का जादे उमेद ना करे के चाहीं।

—काहें ! ऊ आँखि गुँड़ेरत कहलस।

—हमनीं का भाग्य में इहे लिखल बा। बिरसा कहलस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—तें साला, लइकाइयें से डेराभुत बाड़े। तें एह से डेरात बाड़े कि कहीं मिलमालिक के खिलाफ कवनो बात निकल जाई त ऊ तोरा के निकाल दी।

—ना, हम ओह साला से काहें खातिर डेराइब। कवनो मुफुत में थोरे पइसा लेत बानीं।

—से त ठीक बा। बाकिर कहाँ मिलत बा हमनीं के जाएज मजूरी। हमनों के त ओतनो नइखे मिलत जवना में अदिमी दू जून खाना खा सके।

—हँ, ई त तूँ ठीके कहत बाड़। हमहूँ तोहार बात मानत बानीं। बिरसा कहलस।

"हम बेकारी दूर करने की भरसक कोशिश करेंगे। अगर आपलोगों का सहयोग मिला, तो इस नपुंसक व्यवस्था को हम लोग तहस-नहस करके रख देंगे·····"।

माइक के आवाज आवत रहे। बिरसा चुपचाप बइठल ओकर बात सुनत रहे। ऊ कहलस—बुझाता आजु रामलाल ना आई। पता ना, आजु आई कि ना। अच्छा, अउर थोड़े देर देख लेल जाव। अतना कह के ऊ फेरु चुप हो गइल। आ ओकनी का बीचे एगो अनचिन्हार चुप्पी पसर गइल। बिरसा के आवाज देत ऊ चुप्पी तोड़लस—जानतारे, ई रामलाल जवन हमनी के नेता बा नूँ, ऊ हमरा अच्छा आदिमी ना लागे।

बिरसा एह प कुछ ना बोलल।

ऊ कहलस—ई सार के नेता टाइप के लोगन से हमरा दिन-प-दिन का जाने काहें दो घिरना होत जात बा।

बिरसा कहलस, छोड़ कवनो दोसर बात बतिआव। बेकार के बात सोचि के आपन दिमाग काहे खराब कइले बाड़।

—तें त साला लइकाइयें के मुँह-दुब्बर हवस। तबे नूँ तोहनी का अतना कम मजूरी प दिन भर हाड़ ठेठावत बाड़ सन। एगो हमनी के इहाँ देखु, मालिक के नाकन पानी पिआ के छोड़ देले बानीं जा। अब हमनी के बोनसो जादे मिलत बा। आ ऊ एगो बनावटी सुख के कल्पना में छन-भर खातिर बूड़ गइल।

—ओस्ताद, आज अद्धा ना मँगइब का ?

—ऊ कुछ ना बोलल। चुपचाप बीड़ी पीअत आ ओकरा धुआँ के गोल-गोल छल्ला बनावत रहल।

—का ओस्ताद ! का बात बा ?

—चलीं भाई, चलीं। तें त आवते जान खाये लागेलस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—का करीं ओस्ताद, हमार घरवाली ससुरी बड़ा हरमजादी बिया। रात गइला लवटला प बड़ा हल्ला-गुल्ला करेले।

"……भाइयो, इस मौके पर अगर आपने हमारी सहायता की, तो हम पूरी कोशिश करेंगे इन सफेदपोशों के मुखौटे उतारने के लिए और भ्रष्टाचार ……!"

माइक के आवाज एकसुरिये आवत रहे। ऊ चुपचाप बइठल रहे। बिरसा आपन रोवत जात रहे। ऊ मने-मन सोचलस, आखिर का कारन दा? ई सब काहें होला? आ ओकरा बुझाइल जइसे ई सब हमनिये के गलती के फल ह।

बिरसा कहत रहे—जानतार ओस्ताद, परसों से रमिया का माई के बड़ा बोखार वा आ साथे-साथे खाँसियो। काल्हु सेन्टर का डाक्टर के बोला के देखवलीं, त ऊ कहले कि एकरा टी० बी० हो गइल बा। बड़का अस्पताल में ले जाके देखावे के परी।……आ ऊ उदास हो गइल।

ऊ कहलस—जानतारे बिरसा, एह काम में हमनी का खटत-खटत मर जाइब स, बाकिर हमनीं के कर प सुबहित बस्तर ना चढ़ी। हम त सोचतानीं कि फेरु आपन पुरनका धन्धा सुरू क देल जाव। कतना मस्ती रहे ओह घरी!……आ तबहीं ओकर नजर होटल का दुआरी में घूसत चरित्तर प परल। चरित्तर के देख के ओकर करेजा काँप उठल। चरितरो आके ओह दूनों का बीचे बइठ गइलन। कुछ देर ले केहू एक-दोसरा से कुछो ना बोलल। ओह लोग का बीच में चुप्पी कूहा अइसन पसर गइल रहे।

चुप्पी तूरत चरित्तर ओकरा से पुछलन—हरिचरन भाई, तूँ अबहीं ले बिचार कइल हा कि ना? देख, तूँ हमार पुरान संघतिया हव, एही से सोचलीं हाँ कि पहिले तोहरे के मोका देल जाय। आरे, मालोमाल हो जइब। आ ई गदहा अइसन खटलो छूट जाई। अइसे हम तोहरा प कवनो जोर नइखीं डालल चाहत।

कुछ देरी ले चुप रहला का बाद ऊ बोलल—चरित्तर भाई, अब भीतरे से हम अपना के तइयार नइखीं कर पावत। आखिर, अब त जवानी के दिनों ना रहल। अब तूँ हमरा के छोड़ द। अब मत घसेट। अगर हो सके त केहू दोसरा के अपना साथे क ल।

—ठीके बा। तूँ जइसन सोच। हम त कहत बानीं—मउज करब, मउज। अच्छा, हरिचरन भाई, तूँ आपन भला-बुरा समझ लीह। अइसे तोहरा खातिर हमार दरवाजा हरमेस खुला बा।

माइक से आवाज अबहुओं आवत रहे "……भाइयो और बहनो, आप सभी से निवेदन है कि इस आर्थिक आजादी की लड़ाई में सहयोग देकर इसे सफल बनावें।……

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपकी मदद अगर इस बार हमें मिली, तो·····हम सही प्रजातंत्र की व्यवस्था करने की भरपूर कोशिश करेंगे·····" ई साला आजु-काल्हु सुतलो हराम कइले बाड़न स। सही-सही प्रजातंत्र ले आई लोग! सब जाना त अपना-अपना फेर में बाड़े। सभे आपन-आपन कुरसी बचावे का फेर में बा। एह लोगन के धार तबे ले तेज बा जबले ईहो लोग व्यवस्था के औजार नइखे बन जात। बाद में त ई लोग भुरचाइल लोहा अइसन भोथर हो जाई।

—काहें ओस्ताद! उदास काहें भ गइल। कह त आडर दिहीं।

—ठहर अबहीं। तें त साला अतना अकुता जालस कि का कहीं। बुझाता तें एकर दीवाना हो गइल बाड़े।

—दीवाना ना ओस्ताद। आज अतना देरी भइल! अबहीं ले कुछ चलल ना।

—तें साला खाली फुटुर-फुटुर करेलस। लाज लागता त भँगाके पी ले आ फूट इहाँ से। के कहत बा कि एहिजा बइठल रह। आ ऊ चुप हो गइल।

दूनों का बीच फेरु एगो अनचिन्ह चुप्पी पसर गइल। बिरसा का बुझाइल जे एह घरी ऊ हरिचरन के उसुका के नीक ना कइलस हा। ओकरा बुझाइल कि चरित्तर के बात से हरिचरन भाई डेरा गइल होखस। ऊ फेरु हरिचरन के टोकलस—हरिचरन भाई, अबगे नू तूं कहत रह कि अब हमनीं का फेरु से आपन पुरनका धंधा सुरू क देबे के चाहीं। चरितरो भाई बुझला ऊहे बात कहे आइल रहन।

—ना बिरसा। हमनी का धंधा में कवनो खतरा नइखे। आ चरितरा जे कहत रहे ओकरा में त एगो गोड़ जेले में बुझिहे। कब लाल घर देख अइबे कवनो ठीक नइखे। एही से हम डेरात बानीं।

—छोड़ ओस्ताद ई सब झमेला। हमनी का जवन करत बानीं ऊहे ठीक बा। आ ऊ अपने रमिया का माई के इयाद आवते उदास हो गइल। ओकरा बुझाइल जे ई कुल्ह फालतू बात बा आ ई सब हमनिये के गलती के फल ह।

"·····भाइयो·····आज हमारी आजादी चीख रही है·····कराह रही है। अगर आपने हमारा साथ दिया, तो·····एक अनुरोध और है कि हर बार की गलती को न दुहरायेंगे।"

माइक के आवाज सुन के ओकरा बुझाय जे कान में केहू धिपावल लोहा के छड़ घुसारत होखे। ऊ चुपचाप अलचार बइठल रहे। कुछ कइल चाहियो के ना कर सकत रहे। ऊ एक बेरा बिरसा का ओर देखलस। चुपचाप उदास बइठल रहे। ऊ बिरसा के उसुकावल चाहत रहे तले लाइने कट गइल। ऊ मने-मने रामलाल के खूब गरियावत रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...बुझाता ओस्ताद, अब रामलाल ना अइहें।

—हँ बिरसा, तें ठीक कहतारे। देखु ना पैंतालिस-छियालिस बरिस का उमिर में हम सब देख लेलीं। एक ओर अँगरेजन के राज आ दोसरा ओर ई सुराज। का जाने काहें, एह आजादी के अइला से लोग अतना कुरहनी काहें भ गइल। देखु ना, रोज हड़ताल, रोज गोली-बनूक। अउर त अउर जिनिसन के दाम त आकास छूए लागल।

—हँ ओस्ताद, तूँ ठीक कहतार। बुझाता जे एह जबाना में अब खाँटी जहरो ना मिली। देख ना, ई साला इलियसवा के, रोज भोरे चर्च में जाला आ इहाँ छूट के पानी मिलावता सराब में। ई साला दू नमर के बिजनेस त एह देस के खा गइल। अब चलल जाव ओस्ताद। ऊ कुछ ना बोलल। होटल में काम करेवाला लइका के बोला के दू पलेट घुघुनी आ दू जगे अद्धा ले आवे के कहलस। ऊ रामलाल के ना अइला से मने-मन बड़ा अनेसा में रहे। ऊ फेरु एक नजर दुआरी का ओर डललस। आ ओकरा बुझाइल जे रामलाल नियर बेहू होटल में ढूकल हा। रामलाल के देख के ऊ भीतरे-भीतरे बड़ा खुस भइल। बिरसा से ऊ कहलस—देखु, हम कहत रहीं नूँ कि रामलाल जरूर आई। आ ओकरा चेहरा प एगो खुसी के लहर छने भर में धउर गइल। रामोलाल अब टेबुल का निगिचा आ गइल रहन।

—नमस्ते हरिचरन भाई, रामलाल बइठत खा कहलन।

ऊ अपना पाकिट से तीन गो बीड़ी निकललस। सभे के एक-एक गो दे के एगो अपने रख लेलस। सभे बीड़ी के मजा लूटे लागल।

ऊ होटल के लइका के बोला के कहलस—अलगे से एक पलेट करेजी आ एगो आउर अद्धा ले आव।

पल भर खातिर एगो खालीपन ओकनी के बीच में फइल गइल रहे। ऊ रामलाल के बोले के बाट जोहत रहे। एह घरी ओकरा अपना भविष्य के चिंता सबसे जादा सतावत रहे।

अब बिजुली आ गइल रहे। रामलाल हरिचरन का ओर देखके कहलस—हरिचरन भाई, आजु के जबाना में सोझिया आदमी के कहीं बास नइखे। आ ना कहीं इमानदारिए रह गइल बा।

रामलाल का मुँहें अइसन बात सुन के ओकरा मुँहें के सवाद बिगड़ गइल। बाकिर ऊ चुपचाप रामलाल के हँ में हँ मिलावत रहल।

—देख हरिचरन भाई, अबकी तोहरा 'वर्कशोप' के एके-एक भोट हमरा मिले के चाहीं। हँ, आ देख, बिरसो के कह द। अगर ऊहो आपन भविष्य सुधारल चाहत होखे त अपना इहाँ के सभ भोट हमरे के दिअवा देव।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—हँ बिरसा, रामलाल भाई के मदत कइला में हमनिये के भलाई बा। ऊ कहलस।

—हरिचरन भाई, तोहार काम हो गइल बा। काल्हु-परसों ले तोहरा कागजो मिल जाई। अच्छा अब चले के।

कुरसी से उठत ओकर नजर ढनढनात खलिहा गिलास प परल। ऊ अपना छूँछ किसमत के कोसत सुदिन का इन्तजारी में रामलाल का साथे होटल का बाहर आ गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राहत का तलास में

फाइल पर 'नोट' देत-देत एक-ब-एक हमार नजर सामने टाँगल देवाल-घड़ी पर जाके रुक जात बा। बुझाता जइसे घड़ी के सूई थम गइल होखे। हस अपना मन के अस्थिर करे के कोसिस करत फेरु आपन नजर फाइल प गड़ा देत बानीं। काम करे के मन नइखे करत। फाइल प ललकी सियाही से साहेब के लिखल गोल-गोल अछर ... बुझाता जइसे केहू फाइल के पन्ना प खून के थोका-के-थोका उगिल देले होखे। सब अछर बुझाता घूमत होखे। घूमत-घूमत सब अछर अलगे-अलगे चेहरा के रूप ध लेत बाड़े स।..... आ घरे बेमार बाबूजी के चेहरा के इयाद पड़ते मन चंचल हो जात बा। डाक्टर कहले रहे—घंटे-घंटे बोखार देखे के ..... आ तबहीं माई के सूखल चेहरा आ माथ प के ललका सेनुर बुझाता जइसे घड़ी के सूई के साथे-साथ सब कुछ थम गइल होखे।

लिलार पर जमल पसेना के अपना गुमसाइल रूमाल से पोंछत मन के अस्थिर करे के कोसिस करत चपरासी के आवाज देत बानीं।

—"का हाकिम ?"

—"तनी पानी दीह। कहके फेरु अपना कुरसी प निचिंत होके बइठ जातानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—" का भाई का खा के चलल रहे जे एह जाड़ो में पिआस लाग जात बा।"

सुन के बुझाइल जे शर्मवा हमरा स्थिति के मजाक उड़ावत होखे। हम एगो खनुसाइल नजर शर्मा प डालतानी आ हमरा मुँह से अनियासे निकल जात बा— "अरे बच्चू, जब नून, तेल आ लकड़ी के चक्कर में परबे, त सब बुझा जाई।"

"—साब पानी।"

गिलास ले के पानी पी लेत बानीं। अइसे इच्छा त चाय पीये के रहे, बाकिर ..... मन मसोस के मुँह रूमाल से पोंछ लेत बानीं। गुमसाइल रूमाल के गंध से मन भिनभिना जात बा। अनमना मन से फाइल के उलट-पलट के देखतानीं।

—" सुनलीं हाँ रउरा बाबूजी के तबीयत खराब रहल हा" कहत हमरा महल्ला के सिंहजी बगलवाला खाली कुरसी प बइठ जातारन।

सोचलीं, दोसरा के आगे आपन दुख रोवला से कवनो फयेदा नइखे। आ अपना के सहज करत कहलीं— "सिंहजी हो जाय धुआँ-धुकुर।"

'विल्स' के पाकिट निकालत देख के मन गदगद हो गइल। सिंहजी अपने सिगरेट निकाल के पाकिट हमरा ओरि बढ़ा देलन। पाकिट से सिगरेट निकाल के धरा लेत बानीं। आ खूब मस्ती में दम लगा के खींचतानी। कतना दिन बाद आजु कीमती सिगरेट पीये के मिलल बा। रोज सोचीला, आजु जरूर किनब, बाकिर पाँच बजते कातिक के बैल-नियर गोड़ अपनहीं घर का ओर घूम जाला। सिगरेट के दम लगा के धुओं उपरे फेंकत बानीं आ आपन चेहरा के ओह धुआँ में लुकावे के कोसिस करत हमरा बुझाता कि छन-भर खातिर सब चिंता-फिकिर के झमेला से छुटकारा मिल गइल होखे। ..... आ तबहिएँ सिगरेट के धुआँ में बनत-बिगड़त चेहरन के देख के मन चंचल हो जात बा।

"बिनय बाबू हमार बाला एरियर बिलवा बना देतीं त कुछ काम हो जाइत।"

हमार धेयान उनुकर आवाज सुनके टूटल। सहज होत हम कहलीं—"सिंहजी घबड़ाईं मत; हमहूँ तनी परेसानी में बानीं।"

—आ हमरा चेहरा पर उदासी के एगो लहर घउर जात बा। हाथ के सिगरेट अब जाके खतम हो रहल बा। टेबुल पर रखल 'ऐस ट्रे' में सिगरेट के डाल के सिंहजी का ओर देखतानीं। आ मने-मने कहत बानीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—"अतना आसान नइखे सिंहजी जतना रउरा बूझत बानीं।"

सिंहजी सिगरेट के पाकिट हमरा टेबुल पर छोड़ के उठत कहले—"अच्छा, विनय बाबू साँझि खा डेरा प आइब।"

हम एक नजर सिंहजी पर आ एक नजर टेबुल पर पड़ल सिगरेट के पाकिट पर डालतानीं। ..... आ हमरा मुँह से अनियासे निकल पड़ता—कुत्ता कहीं के। तें हमरा के का समझतारे। आ हम अपना चपरासी के बोला के कहलीं—"ई सिगरेट के पाकिट सिंहजी के दे आव।"

चपरासी के गइला पर बुझाता जइसे हम एगो पाप करे से उबर गइल होखीं। खुल के साँस लेत बानीं। मन के कुछ चैन मिलत बा। तबहीं हमार नजर सामने टाँगल देवाल-घड़ी प पड़त बा।..... आ अपने आप हाथ फाइल समेटे लागत बा। आलमारी में ताला लगाके आपन खड़खड़िया साइकिल उठा के चल देत बानीं। चढ़ला पर चरचों-चरचों के आवाज करत साइकिल आगे बढ़त जात बा। साइकिल के आवाज सुन के हमरा बुझाइल जइसे बहुत दिन के संघतियो आज हमार दसा देख के हँसत होखे। हँसो काहें ना। एहू बेचारा के त छव महीना हो गइल तेल-पानी देला। इहे त एगो सहारा बा .....आ हमार पैर साइकिल के पायड़िल के साथे अनाधुन घूमे लागत बा।

दूरे से दुआरी पर नजर गइल। एकदम सान्त। बुझाता जइसे सब कुछ थम गइल होखे। दुआरी पर के परदो सान्त रहे, जइसे ओकरा ठड़मुरकी मार देले होखे। खिरकी पर बइठल करिया बिलाई के देख के मन एगो अनजान डर से काँप उठल। मन में खराब बिचारन के लरी लाग गइल। बइठका में साइकिल रख के भीतर गइलीं।

माई एक ओर खटिया प गेंठरी बनल पड़ल रहे। छोटका के देखलीं। ओकर बोखार तेज हो गइल रहे।

"बाबूजी के तबीयत कइसन बा?"

"बोखार एक सइ चार डिग्री बा।"

ई सुनके हमरा बुझाइल जइसे केहू हथौड़ी से हमरा मगज पर ठाँय-ठाँय मारत होखे। बुझाय जे दिमाग के नस तड़तड़ा के छने-भर में छितरा जाई। हम सोचलीं अबहिएँ लौट चलीं। तबहीं घरवाली के आवाज प पैर थथम गइल। देखलीं, घरवाली हाथ में नास्ता के थरिया लेके ठाढ़ रही।

हम कुरसी प बइठ जात बानीं।

खटिया पर सूतल-सूतल माई हमरा ओर देखतिया। चुपचाप। बुझाता जइसे माई के आँखि कहत होखे "हमार सोहाग लुट रहल बा आ तें अपना पेट का फेर में अझुराइल बाड़े।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माई के उदास आ गुमसुम आँखिन के देखि के मन करुना से भर उठल। बुझाइल जे रोटी के कवर गरदन में रेंगनी के काँट अइसन गड़त बा। मन में आइल कि चलीं पहिले डाक्टर इहाँ से हो आईं ,तब जलखई होई। बाकिर मुनिया के माई का ओर नजर उठते हमार नजर झुक गइल, ओह नन्हीं-नन्हीं आँखिन में अलचारी के परछाहीं देख के, आ हम चुपचाप जलखई करे लगलीं।

जलखई कइला का बाद मन कुछ अस्थिर भइल। मन में आइल, तनी लोट-पोट कर लीं। तबहीं बुझाइल जे हम अपना दिल का भावना का साथे जबरदस्ती करत होखीं। हम उठके बइठका में चल अइलीं।

बइठका से आपन खड़खड़िया साइकिल उठा के चल देत बानीं। मन में सोचलीं, डाक्टर से कहबि कि तनीं चल के देखि ल। तबे इयाद पड़ल—तब त डाक्टर साहेब के दछिनो देवे के परी; आ हमार सइ मूँठी के मन एक मूँठी हो गइल। का करीं डेरो त सहर से तीन मील दूर बा। कवनो रेक्सोवाला आवे के तइयार ना होखे। ..... मन में सोचलीं—चल डाक्टर से कह देबि कि कवन-कवन तकलीफ बा, त ऊ दवाई दे दिहें। आ तबहीं साइकिल के चेन उतरला के कारन हमरा बिचारन के लरी टूट गइल। ठीके कहल बा—बनला के सभे बिगड़ला के केहू ना। कसहूँ साइकिल के चेन चढ़ा के साइकिल आगे बढ़ावत बानीं। साइकिल हमरा दसा पर हँसत आगे बढ़त जात बा।

सड़क प एने-ओने आवत-जात लोग, आकास के छुवत कोठा-अँटारी, आधा टाँग तोपल आधा उघार रहेवाला पोसाक पेन्हले सड़क पर चहकत ललमुनियाँ। ..... सिनेमा हाल से आवत जन-गन-मन के टूटत आवाज ..... टिकठ-खिड़की पर एक-प-एक उठत-गिरत लोग ..... आ टुटही साइकिल पर रेंगत हम। बुझाइल जे हमरा सरीर पर हजारन कीड़ा रेंग रहल बा। मन बेचैन भइल जात रहे। मुँह पर पसेना तड़तड़ा के छूटत रहे। जल्दी-से-जल्दी डाक्टर इहाँ पहुँचल चाहत रहीं। आ हमार साइकिल रहे, जे अपना टुकदम-टुकदम चाल से आगे बढ़ल जात रहे। कवनो तरे हम डाक्टर के दवाईखाना भीरी पहुँचलीं। दवाईखाना के ऊपर टाँगल साइनबोर्ड के देखत बुझाइल जे ई साइनबोर्ड हमरे अइसन अलचार लोगन के खून से लिखल गइल बा।..... आ मन खीसी भूत भ गइल। अलचारी में तनल मूँठी लरक के रह गइल। का करीं। मन मारि के दोकान का भीतर गइलीं, त पता लागल कि डाक्टर अबहीं नइखन आइल। ई जानि के हम उहँवें बगल के दोकान में बइठ के पत्रिका देखे लगलीं! ओहिजे रमेसर से भेंट भइल। एगो इहे त संघतिया बा, जवना से बाहर-भीतर सब कुछ बतिया लिहिला। रमेसर से मिल के बुझाला जइसे आदमी अपना लोगन के बीच में बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"कइसन तबीयत बा रउरा बाबूजी के ?"

"का कहीं इयार, उनुकर हालत त गड़बड़ बड़ले बा, परिवारो में एगो ठीक होता तले दोसरका नमर लगवले रहता।"

"त इहँवाँ का कर तार ?"

"डाक्टर के बाट जोह रहल बानीं।"

'मरदे ! जरूरी बा त उनुका डेरवे प भेंट क ल।"

—आ हम आपन खड़खड़िया साइकिल सम्हारत रसेसर का साथे डाक्टर साहेब का घर ओर चल देत बानीं।

डाक्टर का इहाँ से निकल के बहरी अइलीं त रमेसर कहले, अब हम चलतानीं, फेरु काल्हु भेंट होखी।

हम अपना साइकिल प बइठ के हाट का ओर चल देत बानीं। दवाई के पुरजी निकाल के देखतानीं। ..... आ हमार मन एगो अनचीन्ह भय से केरा के पतई अइसन काँप उठत बा। पाकिट टो के देखत बानीं। गिनल-गूँथल बीस रोपेया आ महीना लागे में दस दिन देरी। हमरा आँख का आगा घरवाली के सूखल उदास चेहरा, रुगी-रुगी फाटत साड़ी ... . छन भर में घूम जात बा। ई डाक्टरो त अइसने बा। साला दवाई के टाल लगा देला। आ साथे-साथ हर बेरा फीस। कवनो रिआयत ना। साला एकदम कसाई ह। आ हमार साइकिल अपने आप "चंदन-फार्मेसी" के आगे रुक जात बा। साइकिल से उतर के दोकान में घुस जात बानीं।

अनजान अनचीन्ह भीड़ में खाड़ हम दोकान के भीतर खाड़ आदमी के दवाई के पुरजी थम्हा देत बानीं। ऊ भीतर से एगो लइका के दवाई निकाले के कह देता। एक, दू, तीन ..... ऊ दवाइयन के नाँव गिनावत चल जा रहल बा। आ दोकान में खड़ा दवाइयन का गंध से हम सुन्न होत जा रहल बानीं। टेबलेटन के पाकिट आ सूई के सीसी देख के हम बोल उठलीं—महाशयजी, पहिले दाम बता देल जाव।"

हमार आवाज सुन के दवाई निकालत लइका के हाथ रुक गइल। ऊ अनसहला अइसन बोलल—पचीस रोपेआ। "सब दवाई आधा-आधा दे द। फेरु बाद में ले जाइब।" ऊ अनसाइल मन से दवाइयन के पाकिट हमरा के थम्हा देत बा। दवाई के पाकिट ले के हम अपना खड़खड़िया पर सवार हो जात बानीं सड़क प नगरपालिका के बत्ती जर गइल बा। अनचिन्हार भीड़ के चीरत साइकिल पर भागत हम ! मन में आइल कि चलीं बचवा खातिर एगो दूध के डिब्बा ले लीं। साइकिल के चाल धीम हो जात बा, बाकिर पाकिट प हाथ जात बिचार ठिठक जात बा। साइकिल के चाल अपने आप तेज हो जात बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घरे चहुँपला पर देखलीं, दुआर एकदम अन्हार बा। सूनापन खटकल। घरवाली के दुआरी पर चुपचाप बइठल देखलीं। हम समुझ गइलीं। साला मकान-मालिक के करामात होई। आ हमार मन खीसी जर उठल। सोचलीं, कुछ साँस लेबे के गँव लागो तब ई घर छोड़ देब। आ साइकिल लेके घर में घुस जात बानीं।

खटिया पर असहाय सूतल बाबूजी के देख के हमार मन करुना से भर उठल। उनुका के उठा के कहलीं—"हइ दवाई खालीं।"

ऊ चुपचाप मुँह खोल के दवाई ले लेले।

घरवाली भीतर जाके खाना निकाल ले अइली। मन में सोचलीं, आज लइका सब सूत गइल बाड़न स। खात-खात, तनी दू बात प्यारो के कर लेब।.....आ तबहीं सामने थरिया में सूखल रोटी आ आम के अँचार देख के मन के बड़ा तकलीफ भइल। अगर तियना ना रहे, त कहितू। हम ले अइतीं। आखिर, एह खाना प हम क दिन चलब।.....तोरा जबन मन में आवे कर।

बच्चा सब जाग गइलें स। ऊ चुपचाप बइठल रही। उनुका आँखिन के कोर में लोर देखि के करेजा दरकि गइल। आखिर, ऊ कवनो चीज के कामना काहें ना करे। आ बुझाइल जइसे सब दोस हमार बा। दोसी हमहीं बानीं। खाना खाके खटिया पर लेट जात बानीं। सउँसे रात तनाव के हालत में कट जात बा। भोरे उठ के स्नान क के पूजा कर लेत बानीं। पता ना, ई आदत हो गइल बा, कि शान्ति के खोज में ई सब करीला।

बाबूजी के बोखार कम रहे। ई जान के मन के तसल्ली भइल।

जलखई क के आफिस जाये खातिर तइयार हो जात बानीं। साइकिल पर चढ़े जात रहीं। तबहीं मकान-मालिक के आवाज प पैर थथम जात बा।—"विनय बाबू अगर रउरा कवनो तकलीफ ना होखे त दोसर डेरा खोज लीहीं।

ई सुनि के मन खीसी भूत हो जात बा। मन भइल, साले के मुँह प दू चटकन खींच दीं, बाकिर चुप रह गइलीं। साइकिल पर चढ़के आफिस का ओर चल देत बानीं। चउराहा प अइला पर कुछ राहत महसूस भइल। साइकिल के गति तेज हो जात बा। आ हमार साइकिल कलाली का ओर भाग रहल बा—राहत का तलास में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गेट का बाहर

आफिस से लवटे में रमन के आज काफी देर हो गइल रहे। साँझ भ गइल रहे। सड़क के दूनों ओर बिजली के खंभा पर बिजली के लट्टू जर गइल रहे। धीरे-धीरे अन्हरिया बढ़ल जात रहे। आकास में करिया-करिया बादर उमड़-घुमड़ के चारू ओर छा गइल रहे। कबहीं-कबहीं बूनियो पानी पड़त रहे।

आकास अतना करिया भइल रहे कि ताके में डर लागत रहे। लवका के लवकल आ बिजली के कड़कल सुनके कमला के करेजा केरा के पतई-अस काँप जात रहे। ऊ कुरसी प बइठल तरह-तरह के बात सोचत रही। बदरी घेरला से ऊमस भ गइल रहे। एह से ऊ बिजली-पंखा चला देली, पंखा धीरे-धीरे चल पड़ल। पंखा चलवला से कमला के सिहरावन लागे लागल त ऊ अपना के साड़ी का अँचरा में कस के लपेट लेली। ससो के बोला के कहली, एक पिआली चाय दे जा, आ अपने कुरसी में गुलटिआइल रमन के बाट जोहे लगली।

बरखा तेज भइल जात रहे। बुझाय कि परलय हो जाई। बरखा कहे कि आजु छोड़के हम काल्हु ना बरिसब। अतने में कमला देखली, केहू गेट खोल के भीतर आइल। ऊ मन में सोचली, उनुका अलावे दोसर के होई, बाकिर साथ में एगो लइका देखके कहली, ना ऊ ना हवन। बुझ ता, केहू हीत-नात ह। ई सोचिके कमला के मन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदास हो गइल। ऊ मन में सोचली, अगर उनुका के खोजत होइहें त साफे बहाना क देब। एह तरह के कतना बात छने भर में कमला के दिमाग में दउर गइल। ऊ आँख मूँद के कुरसी पर ओठंग गइली। आँख खोललीं त देखली, सामने पतिदेव एगो लइका के साथे खड़ा रहन।

पुछली—"ई केकर लइका ह ?"

रमन कहलन—"हरिया के लइका ह नू। बाप-मतारी दूनों मर गइलन स। टुअर हो गइल, त हम सोचलीं कि ले चल एक दू साल में काम करे लागी त कम-से-कम एगो खानदानी नोकर त रही नू।"

कमला कुनमुनात कहली—"हमरा ई ना बुझाय कि कबहीं-कबहीं रउरा का हो जाला। ना जाने कहवाँ से ई झूठमूठ के बलाय रठा के ले अइलीं।"

"बलाय, बलाय का कइले बाड़ू। मन लाग जाई, त तोहार गुलाम बनके रही, गुलाम बनके"—रमन कहलन।

—"रउरा त जगलो में सपने देखत रहीला। जाईं, रउरा मन में जे आवे से करीं"—कमला कहली।

हरिया के लइका पानी में भींजल रहे, एह से पंखा के हवा से ऊ थर-थर काँपत, बगल में खाड़, चुपचाप टुकुर-टुकुर कबहीं कमला आ कबहीं रमन के मुँह का ओर देखत रहे आ मने-मने ओह लोग के बातचीत समझे के कोसिस करत रहे।

"तोर का नाँव ह रे ?"

'महेसवा'—ऊ भरभराइल आवाज में बोलल।

"काम करबे"—कमला पूछली।

"हूँ"—महेसवा कहलस।

ससी चाय लेके अइली आ बाप-मतारी के चाय देके एक ओर खाड़ भ गइली।

कमला ससी का ओर देखत कहली—"एकरा के ले जाके सूखल कपड़ा दे दे, ना त ठंढ मार दी।"

महेसवा थर-थर काँपत रहे। ओकरा के काँपत देख के ससी के दिल दया से भर उठल। ऊ ओकरा के लेके रसोइया घर में चल गइली। ओकर भींजल कपड़ा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निकाल के ओकरा के आग का भीरी बइठा देली, आ अपने दोसरा घर में चल गइली—सूखल कपडा ले आवे।

महेसवा रसोई-घर में चूल्हा के नियरा बइठल-बइठल सउँसे घर के एक बेरा ठीक से देख लेलस। बगल में लाल-लाल टमाटर राखल देख के ओकर जीव ललच गइल। ओकर मन भइल कि एगो टमाटर उठा के खा जाव, बाकी ऊ अपना के सम्हारत कहलस—ना, ना, ई त चोरी ह। आ चोरी कइल त पाप ह। आ अपना बाप के इयाद ओकरा आ गइल। बाप-मतारी के इयाद आवते ओकरा नन्हीं-नन्हीं आँखिन के कोरन पर मोती झलमला उठल।

"ससी कपड़ा लेके अइली। कपड़ा पेन्हाके ससी पुछली, भूख लागल बा, खाना खइबे ?"

महेसवा मूँड़ी हिला देलस।

ससी ओकरा के खिआ के अपना घर में सुता अइली।

रात में खाये का बेरा चरचा के बिसय महेसवा रहल। खाना खइला का बाद कमला कहली—"ओकरो के खिआ के बाहरे कहीं सूते के इन्तजाम कर दीहे।"

"ओकरा के खिआ के हम अपना घर में सुता देले बानीं। बड़ा सीधा लइका बा"—ससी कहली।

"हँ, हँ, तोरा त सब सीधे लागेला।"

"ससी के बात से रमन का सह मिलल त ऊ कहलन—हहे देखि के त हम एकरा के ले अइनी हँ कि घरे रही त बड़ा काम के आदिमी होई।"

खाना खइला-पिअला का बाद सब केहू अपना-अपना घर में सूते चल गइल।

× × ×

दू, तीन बरिस बाद—ऊहे घर, ऊहे अँगना।

मुकेस के इस्कूल जाये के बेरा भ गइल रहे। ऊ खाना खाके अपना इयार लोगन के बेरा देखत रहन। महेसवा पँजरे पाया से सट के खाड़, एकटक मुकेस के देखत रहे। मुकेस के इयार लोग आ गइल रहन। मुकेस अपना इयार लोगन का संगे रेक्सा प बइठ गइले, त महेसवा जलखई के डिब्बा ले आइल आ उनुका के धरा के लवट गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना कोठरी में आके ऊ चउकी प सूत रहल। एह समय, ओकरा दिमाग में खलबली मचल रहे। बिचारन के समुन्दर में ऊ डूबत-उतरात रहे। का हम मुकेस के अइसन रेकसा प चढ़के पढ़े ना जा सकीले ? आखिर हमरा उनुका में का फरक बा ? इहे सब सोचत ऊ चउकी प सूतल रहे। तबहीं, केहू के आवाज सुनके ओकर धेयान टूटल। उठके देखलस त ससी दुआरी प खाड़ मुसकात रही। महेसवा पुछलस—"काहें खाड़ बाड़ू दीदी ?"

"खाना ना खइबे का ?"—ससी पुछली।

"खाइब"

—कहके महेसवा ससी के पीछे-पीछे चल पड़ल। ऊ मन में सोचलस—काहें ना इनिके से कहीं, बाकिर डर का मारे ऊ चुपचाप आगे बढ़ल जात रहे। जब मन ना मानल त ऊ धीरे से कहलस—"दीदी।"

ससी खाड़ होके पुछली—"का बात बा ?"

महेसवा सिहाइले कहलस—"दीदी, का हम ना पढ़ सकीले ?"

"हँ, हँ, काहेंना, खाली लगन त चाहीं। मुकेस का साथे तेहूँ पढ़िहे। आजु सांझि के बाबूजी से कहके तोरा खातिर इसलेट आ किताब मँगवा देब"—ससी कहली।

साँझि होत रहे। रमन आफिस से छुटला का बाद सीधे घरे पहुँचलन। कपड़ा बदल के ऊ ओसारा में बइठल अखबार पढ़त रहन।

महेसवा बगल में खाड़ ओह-पोह में डूबल रहे कि उनुका से कहे कि ना कहे। तले रमन पुछले—"काहे खाड़ बाड़े ? कुछ काम बा का ?"

ऊ सोचलस, कहीं कि ना। कहीं खिसिया मत जासु।

तबले रमन कहले—"कहु-कहु घबड़ाए के बात नइखे। कुछ कहे के होखे त कहु।"

ऊ सिहाइले कहलस—"हमरो नाँव इस्कूल में लिखवा दीं। हमहूँ पढ़े जाइब।"

अतना सुनते रमन के खून खउल उठल। चेहरा तमतमा गइल। ऊ अपना पर काबू करत कहलन—"जो, जो, आपन काम कर। सब कुकुर कासिये जइहें त हँड़िया के ढूँढ़ी।"

रमन के बात महेसवा का बान अस लागल। ओकरा मुँह के सवाद कसइला हो गइल। ऊ सीधे अपना कोठारी में आके चउकी प पटा गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ससी के बोली सुनके ऊ पुछलस—"दीदी, कुछ काम बा ?" महेसवा के भींजल पलकन के देख के ससी पुछली—"रोवत बाड़े का ? आरे पागल, अबहीं त तोर दीदी जियत बिआ, फेरु फिकिर कवना बात के। हम तोरा के पढ़ा देब।"

महेसवा कहलस—"ना दीदी, अब हम भुलाइयो के ई बात जबान प ना चढ़े देब। अगर हमरा भाग में पढ़े के लिखल रहित त हमहूँ कवनो बड़ घर के सोभा बढ़इतीं, हमरो आगे-पीछे नोकर-चाकर लागल फिरित।"

महेसवा के ब्यंग वचन सुनके ससी के चेहरा सरम से लाल हो उठल। ससी कहली—"हइ ले पइसा, आ दोकान से गरमई ले आव, आ अपना के एगो सिलेट ले लीहे।"

महेसवा पइसा लेके दोकान का ओर चल पड़ल। राह में ओकरा दिमाग में तरह-तरह के बात आवत-जात रहे। आखिर ससी के सनेह के बल प ऊ आजु ले इहाँ टिकल बा, ना त एहिजा से ओकर कन्ना कवे कट चुकल रहे। आ रेकसा प कनभेन्ट से आवत-जात लइकन के देखके ओकर मन मचल उठल। ऊ मन में सोचलस —"आखिर हमरा आ मुकेस में का फरक बा।" हहे सोचत ऊ आगे बढ़ल जात रहे, तले रेक्सावाला के बोली सुनके ओकर धेयान टूटल। ऊ देखलस, तनीमनी में रेक्सा ओकरा देह प चढ़ जाइत। होखेवाली दुरघटना के कल्पना से ओकर सउँसे देह के रोवाँ गनगना के खाड़ हो गइल। ऊ पइसा के मुट्ठी में जँतले, दोकान का ओर बढ़ गइल। दोकान से समान लेके ऊ घर का ओर सोझ भ गइल।

राहता में मँगरुआ सिलेट देखके पुछलस—"का गुरू, ई सिलेट का होई ?"

"पढ़े खातिर"—महेसवा कहलस।

"अपना।"

"हँ।"

"का गुरू, कहीं बूढ़ सुगा पोस मानेला ? आरे जवन काम हमनी का जिम्मे बा, उहे ठीक से सँपर जाव, त बढ़ियाँ बा।"

"अच्छा, जो, जो, कनून मत बतिआव।"

—कहके महेसवा अपना डेरा में घुस गइल।

महेसवा अब घर के काम-काज से फुरसत पाके कुछ पढ़-लिख लेत रहे। बीच-बीचमें ससी ओकरा के आगे के पाठ पढ़ा देत रही। महेसवा एके दू महीना में पहिलकी पोथी खतम कर देलस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महेसवा के लगन देख के ससी के मन प्रसन्न भ गइल। ऊ मन में सोचसु—चल, हमार मेहनत अकारथ नइखे नू होत। महेसवा के पढ़ावत खा बढ़ावा देसु—"अगर तें एही तरह मेहनत करबे त थोरहीं दिन में ढेर चीज सीख लेबे।

समय के पहिंया अपना निश्चित धूरी पर गँवें-गँवें घूमत रहे। दिन के बाद महीना, महीना के बाद साल बीतत जात रहे।

अब महेसवा ढेर बदल गइल रहे। अब ऊ साफ-सुथरा रहत रहे आ घर के सब चीज-बतुस खूब सजा के राखे लागल रहे। महेसवा में ई परिवरतन देखके रमन आ कमला दूनों आदमी खुस रहत रहे लोग। रमन त महेसवा के बड़ाई करत अघात ना रहन। आ जब कमला महेसवा के बड़ाई करसु तब त उनुकर छाती गज भर के हो जात रहे। महेसवा काम से फुरसत मिलला का बाद अब आपन समय कबनों-ना-कबनों किताब पढ़े में बितावे। ससी के सनेह से सनल व्यवहार ओकरा के आगे बढ़े खातिर मजबूर करत रहे। पढ़त-पढ़त कबहीं ऊ सोचे—ठीके, हम पढ़के का करब? तबहीं अन्तरात्मा से आवाज आवे—"अरे ई का सोचतारे? चुपचाप आपन काम कर। अबहीं तोहरा ओर कतना आँख चुपचाप निरनिमेष निहार रहल बाड़ी स। ना पढ़ब त ओकनी के सपनन के महल छने भर में धूरि चाटे लागी।" तबहीं महेसवा के आँख का आगा नन्हीं-नन्हीं लइकन के भूख से कुम्हिलाइल चेहरा नाच गइल। महेसवा किताब लेके बइठ गइल। ससिये का सनेह के कारन एह राह प ऊ बढ़ल-चढ़ल आवत रहे। ससिये का सनेह के कारन अब ओकरा भीतर के हीन भावना खतम हो चुकल रहे।

सुबह के बेरा रहे। सुरुज के किरिन ऊपर उठ आइल रहे। रमन, कमला, मुकेस, सब लोग नहा-धोआ के बइठका में बइठल रहे लोग। महेसवा नहा-धोआ के तइयार हो गइल रहे। उहो बइठका में पाया का पँजरा खाड़, चुपचाप मालिक-मलकिनी के बात सुनत रहे। थोरकी देर के बाद ऊ देखलस कि ससी एगो थरिया में राखी आ मिठाई लेके अइली। थरिया टेबुल पर रख के मुकेस का हाथ में राखी बन्हली आ मिठाई खिअवली। पाया का पँजरा खाड़ महेसवा के मन एक-ब-एक उदास हो गइल—अपना बहिन के इयाद क के, जवन अकाल में मरि गइल रहे। कतना मानत रहे ऊ, ई इयाद परते महेसवा का नन्हीं-नन्हीं सीपी-अस आँखिन के कोर से लोर के बून मोती-जइसन चू पड़ल।

रमन कहलन—"ससी एकरो के मिठाई दे द।"

ई सुन के महेसवा के मन मोर-नियर नाच उठल। ससी के सनेह के धार में ऊ अपना के सम्हार ना सकल आ ओकरा मुँह से अनियासे निकल पड़ल—"दीदी, हमरा के राखी ना बन्हबू।"

आ हँसी-खुसी के बातावरन तुरते तनाव में बदल गइल। रमन कड़कत आवाज में कहले—"जब देख तब ससुरा फालतू बात बोलत रहेला। कइसे दो कहल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा—'बाप के नाँव साग-पात बेटा के नाँव परोरा'। एक बेरा ससुर के पढ़े के ताव जागल त एक बेरा राखी बन्हवावे के। जो आपन काम कर। जवन बात पूछल जाय ओकरे जवाब दे।"

रमन के बात सुनके महेसवा तिलमिला गइल। ओकरा बुझाइल जइसे केहू ओकरा कान में लाल दहकत गरम छड़ घुसेड़ देले होखे। रमन के बात सुन के ओकर आँख छलछला आइल। एक बेरा ऊ ससी का ओर आँख उठा के देखलस। ससी के आँखिन से झाँकत लाचारी आ बिबसता के देख के ऊ चुपचाप अपना कोठरी में आके सूत रहल।

महेसवा के आँखिन में भरल लोर के देख के ससी के करेजा दरक गइल। ऊ मन में सोचली—एक बेरा बाबूजी के कहीं कि अगर हम राखी बान्हिए देव त का होई, बाकी बाबूजी के मन तउल के ऊ सोचली—ना, कहला से कवनो फायदा ना होई, उलुटे घटे होई। ई सोचके ऊ चुप रह गइली। उनुका मन में बड़ा चोट लागल। घर के काम-काज ओरिया के ऊ महेसवा का कोठरी का ओर गइली।

केहू के आवाज सुनके महेसवा के नीन टूटल। मूँड़ी घुमा के ऊ दुआरो देने देखलस। दुआरी पर ससी के खाड़ देख के ऊ कुछ ना बोलल। चुपचाप मुँह फेर के सूत रहल।

ई देख के ससी भीतर अइली आ ओकरा के गुदगुदा के उठावत कहली—'अरे छोटका भइया, कबले रूसल रहब, अपना दीदी से। तनी आँख खोलके बइठ त।"

महेसवा कहलस—" ना दीदी, हम रूसब काहें। कुछ काम बा का ? आ तोहरा से रूसे के हमार का हक बा? गलती त हमरे बा। भावना में हम आपन अवकात भुला गइल रहीं। रोज दीदो कहत-कहत, हम तोहरा सनेह में ऊ बात कह देले रहीं। हम ई भुला गइल रहीं कि हम घर में नोकर बानीं आ रउवा सभे हमार मालिक बानीं। इहे हमार गलती बा।"

महेसवा के ब्यंग-भरल बात सुन के ससी का खराब लागल। ओकर डबडबाइल आँख देख के ऊ मन में सोचली—ना, अबहीं कुछ कहला प काम बिगड़ जाई। एह से ऊ पिआर-भरल बानी में बोलली —"आरे, त हम अब तोर दीदी नइखीं का? "महेसवा डबडबाइल आँख उठा के ससी का ओर देखके चुप हो गइल। एह घरी ओकरा दिमाग में हलचल मचल रहे। ओकरा मन में आइल कि कह देव कि हमार-राउर सम्बन्ध त नोकर आ मालिक के बा। बाकी ससी के सनेह का आगे ओकर बोली ना निकलल। ऊ चुपचाप मूँड़ी गाड़ के चउकी पर बइठ गइल।

ससी कहली—"चलु, हाथ बढ़ाव, कि अबहियों रूसले रहबे।" महेसवा के मन ना करत रहे। मन में आइल कि कह देव कि तू हमार दीदी ना हऊ। हम तोहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाई ना नोकर हईं ।.....तबहीं ससी के बोली सुन के ओकर धेआन टूटल ।

ससी कहत रही—"चलु, हाथ बढ़ाव । भला अपना दिदिओ से केहू रूसेला । चलु हाथ बढ़ाव ।"

मन नाहियों रहला पर महेसवा का ससी के सनेह का आगा झुकहीं के परल । ऊ हाथ बढ़ा देलस । ससी हाथ में राखी बान्ह के चल गइली ।

रमन के बात महेसवा के आगे बढ़े से रोकत रहे । ठीक ओकरा उलुटा ओही घर में ससी के सनेह ओकरा के आगे बढ़े प मजबूर करत रहे । काम-काज का बाद अब ऊ पढ़ाई में जादे समय देत रहे । महेसवा के पढ़ाई से ससी के पूरा संतोस होखे ।

एक दिन ऊ काम-काज क के सहर गइल । किताब के दोकान पर से ऊ एगो किताब कीन के ले आइल । साँझि खा ऊ बरामदा में कुरसी पर बइठल ससी के किताब पढ़ के सुनावत रहे । त, एक-ब-एक, ऊ देखलस—मालिक रेकसा से उतरत गेट खोलले । गेट खुलते रमन के नजर महेसवा के हाथ का किताब पर परल । किताब देखते रमन के खून खउल उठल । रमन महेसवा के हाथ से किताब छीन ले ले ।

रमन के ई बेवहार देख के महेसवा आवेवाला बिपति के कल्पना क के काँप उठल । ऊ चुपचाप रमन का पीछे-पीछे चलत रहे । ओकरा मन में तरह-तरह के बिचार उठत आ गिरत रहे ।

ओसारा में चढ़ते रमन ससी के डाँटे सुरू क देले—"तोरे कारन ई कपार पर चढ़ गइल बा । तें एकरा के बड़ा छूट दे देले बाड़िस । अच्छा नइखे । आजु से अगर तें एकरा के जादे छूट देबे त हमरा से बुरा कोई ना होई । आखिर ऊ नोकर नू ह ।

महेसवा बगल में खाड़ ससी के डाँट खात देखत रहे । आखिर ओकरे चलते त ई सब होत रहे । ऊ मने-मन अपना पर खनुसात रहे ।

"ई किताब तोरा कहँवा मिलल हा ?"

रमन के कड़कत आवाज सुनके महेसवा के धेयान टूटल । ओकरा अपना हालत के गेयान भइल । ऊ आह-पोह में पर गइल । का कहो, का ना । कुछ समझ में ना आवत रहे । ऊ कहलस—"कीन के ले अइली हँ ।"

अतना सुनते रमन के चेहरा खीस का मारे तावा-अस लाल हो गइल । चटाक-चटाक ऊ महेसवा के गाल पर दू तबड़ाक जमा देले । "पाजी कहीं का । तोरा जवन मन में आई तवन तें करबे । एह तरह के किताब ले आके तें पढ़तारे.....तनिको खेआल नइखे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शहीदन के प्रति गंदा सबद सुनके ओकर मन कइलस, कहदे, रउरो से..... केहू बा । जवना धरती माता का गोदी में लइका से जुआन भइलीं, आँख के आगा ओकर दुरदसा देखत बानीं । आ अपने मजा उड़ावत बानीं । रउरो से केहू ..... होई । बाकिर ऊ ना कह सकल ।

बगल में खाड़ ससी का ओर नजर उठा के देखलस । ससी के आँखिन से सनेह झाँकत रहे । महेसवा कुछ ना कहलस । चुपचाप ससी के पैर छुअलस, आ गेट का बाहर आ गइल ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पह फाटे का पहिले

जाड़ के दिन रहे। पछिया बेआर बहत रहे। ठंढा से सउँसे सरीर पीपर के पतई अइसन काँपत रहे। दाँत कट-कट करत रहे। बुझात रहे जे हाथ-गोड़ के अगुँरी कटि के गिर जाई। ठंढा से नसन के खून जमत जात रहे। सोचे के सक्ति धीरे-धीरे जवाब देत रहे। अपना के ठंढ से बचावे खातिर धीरे-धीरे सुनुगत कउड़ा भिरी बइठल, जरत बुतात अंगारन के देखत रहीं।

अन्हरिया रात कुचकुच। हाथ के हाथ ना सूझत रहे। रात साँय-साँय करत रहे। आकास में छितराइल तरइन के पाँत कबहूँ-कबहूँ भगजोगनी-अस चमक जात रहे। गाँव के लोग खा-पी के अपना-अपना बिछवना में लुका गइल रहे। साइते केहू आदमी अबहीं ले जागत रहे। समूचा गाँव उँघात रहे। सरदी के डर से एक ओर लोग कम्बल आ रजाई में लुका गइल रहे आ दोसरा ओर दूर खेत के मेंड़ पर कंबल लेले लोग खेत में पड़ल, अनाज के रखवारी करत रहन।

कउड़ा गँवें-गँवें सुनुगत रहे। हम कउड़ा भिरी बइठल रहीं। मन में तरह-तरह के बिचार, समुन्दर के लहर अइसन उठत आ गिरत रहे। दूर कतहीं उल्हआ के रोवल सुन के करेजा केरा का पतई अइसन काँप गइल। हिरदेया असगुन के संका से भर उठल। सउँसे देह में सिहरन के एगो लहर धउर गइल। मन चिंतित हो उठल। मन में उठत बिचारन के एगो झटका देत कहलीं—"ना, ना, अइसन ना हो सकेला। ऊ जरूर अच्छा हो जइहें।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—संकालू मन ना मानल। सक मिटावे खातिर उठ के देख लेल अच्छा बुझाइल। चदर सम्हारत उनुका खाटिआ के नियरा गइलीं। आँख बन्द। चेहरा पर सान्ति बिराजत रहे। मन में संका भइल। कहीं एकदम सांत त·····ना। ना अइसन नइखे। आ हमार हाथ उनुका नाड़ी का ओर बढ़ गइल। नाड़ी ठीक रहे। मन के संतोस भइल। उनुका के सूतल छोड़ के हम बहरी आ गइलीं।

देह प चदर सम्हारत कउड़ा का नियरा रखल ईंटा पर हम बइठ गइलीं। कउड़ा के आग ऊपर से निभा गइल रहे। कउड़ा के हाथ से उटकेरत पुअरा डालि के आग लहरा लेलीं। सउँसे ओसारा भक से अँजोरा में नहा उठल। कउड़ा प बइठल-बइठल आँख झींपत रहे। जागे के कोसिस में हम रामायन के चौपाई गुनगुनात रहीं। दियरखा पर राखल ढिबरी के मधिम रोसनी सउँसे दलान मे फइलल रहे। ढिबरी के लौ से दियरखा में करिखा परत-दर-परत जमल जात रहे। हमरा दिमाग में बिचारन के अन्हड़ बहत रहे। सोचत-सोचत हमरा हाथ के अँगुरी कउड़ा का आग से ठेक गइल। सउँसे देह झनझना गइल। रोआँ-रोआँ खड़ा हो गइल। एक-दू मिनट का बाद मन थिराइल। गली में लड़त कुत्तन के आवाज रात के सूनापन के तूरत हमरा कान में पड़ल। दिल काँप गइल। धड़कन बढ़ गइल। बायाँ आँख के बार-बार फरकला से संका के जरि अउरी मजबूत भइल जात रहे।

"बबुआ।"

आवाज सुनके धेआन टूटल। उठके उनुका खटिया भीरी गइलीं।

पुछलीं—"कुछ कहत रहीं का?"

"पानी।"

—अतना कह के ऊ चुपा गइले।

उनुका के पानी पिया देलीं। गिलास रख के उठत रहीं त देखलीं—ऊ हमरा ओर देखत रहन।

"अउर कुछ चाहीं का?"—हम पुछलीं।

"ना।"

ऊ इसारा से कहलन।

कउड़ा का नियरा बइठल-बइठल मन ऊब गइल रहे। रात के सूनापन काटत रहे। ओसारा का बाहर आके 'तिनडेंड़िया' देख के रात के अन्दाज लगावल चहलीं, बाकिर कुहरा गिरे के कारण असमर्थ रहलीं।

हम ओसारा में आ गइलीं। कउड़ा पर बइठत पुअरा पर सूतल सुरेन्दर का ओरि देखलीं। बुझात रहे, ऊ घोड़ा बेच के सूतल रहे। नाक फोंइ-फोंइ करत रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खाए आ घूमे के बलावा घर में का होत बा, एकरा से कबनो मतलब नइखे। आखिर मतलब होखे कइसे ? एकर सब श्रेय त इनके बा। अपना प्रति उनुकर बेवहार इयाद क के मन घिरना से भर उठल। मन कइल जे हमहूँ सूत रहीं। का इहीं रात-भर जागे के ठीका लेले बानीं। कतना मानत रहन सुरेन्दर के, जइसे हम उनुकर बेटा ना हईं। एह तरह के कतना बात मन में तैरत रहल·····उनुका के खटिया पर निसचल असहाय अवस्था में पड़त देख के मन करुना से भर उठल—एक छन खातिर। पास में पड़ल लकड़ी के टुकड़ा से आग उटकेर लेलीं।

रात बीतत ना रहे। जइसे जम गइल होखे। एक-एक पल कटवावन लागत रहे। बइठल-बइठल टाँग दरद करे लागल रहे। आँख झँपाए लागल रहे। पासे बिछावल पुअरा पर हमहूँ रजाई ओढ़ के लेट गइलीं। आँखि मूँद लेलीं। आँखि मुँदला का थोरे देर बाद बुझाइल जे माटी के बनल देवाल के टेढ़-बाँकुर सतह अलग-अलग चेहरा बन के हमरा ओर देख के हँसत होखे। तेज आवाज मे कहत होखे—"भोगे द राम खेलावन के। हमनीं के रोआँ-राआँ उनुका के चैन से ना मरे दी।"

आ हमार आँख खुल गइल। हम उठ के बइठ गइलीं। आँख में कुछ दिन पहिले के दृश्य नाच उठल। बाबू दुअरा पर बइठल रहन। हम बइठल पढ़त रहीं। एही बीच में झगरुआ हाथ में रापेआ लेले आइल। हम बाबू के आँख में प्रसन्नता देखलीं। ऊ भीतर गइले। थोरे देर में बाहर आके ऊ बोलले—तीन सइ पचहत्तर रुपया भइल।"

झगरुआ के आँख छलछला आइल। ऊ कुछ ना बोलल।

बाबू का हाथ में रुपया रख के ऊ बोलल—"मालिक अब हमार पीठ ठोक दीं।"

—ओकरा बोली के खुसी आ करुना आजुओ हमरा हिरदेया के छू रहल बा।

बाबू रुपया गिन के बोलले—"बाकी रुपया के का होई ?" झगरुआ कहलस—"मालिक कमो-से-कम सुदवा में से अतना छाड़ दीं। जवान बेटा ना नोकसान भइल रहित त हम कुल्हि लौटा दितीं।"

—बाबू के मुँह ओर देखत ऊ घिघियात रहे।

ऊ बोलले—"तोहरा बेटा के जीए-मरे के ठीका हमहीं लेले बानीं का ? बाकी पइसा लवटा द, चाहे हैंडनोट लिख।"

ऊ कुछ ना बोलल। चुपचाप सादा कागज पर अगूँठा के निसान दे के दुआर का नीचे उतर गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झगरुआ के मुंह देख के हम कहलीं—"बाबू, छोड़ काहें नइख देत। अतना सुन के ऊ बिगड़ गइले—"नालायक कहीं के, तोरा का पता बा कि पइसा कहां से आवत बा! चुपचाप आपन काम कर। तोरा……"आ गली में लड़त कुत्तन के आवाज सुन के हमार धेआन टूटल। मन में संका भइल। उनुका खटिया का ओर नजर फेर के उनुका के देखलीं। मन ना मानल। उठ के देह टो के देखलीं त दिल के तसल्ली भइल। फेरु कउड़ा भीरी आके बइठ गइलीं। कउड़ा के आग निझा गइल रहे। गरमी के कवनों उमेद ना रहे, तबहूं हाथ से आग उटकेरत हाथ सेंके के असफल प्रयास कइलीं।

कउड़ा पर बइठल-बइठल हम सोचत रहीं—का ई जिनिगियो एक दिन आग अइसन ठंढा हो जाला। तबहीं फद्-फद् के आवाज सुन के धेआन टूटल। ढिबरी का ओर देखलीं। एगो फतिंगा के बिछकुतिआ पकड़ले रहे। फतिंगा भागे के कोसिस करत रहे बाकिर भाग ना सकल। एही तरह से आदमियों……।

"बबुआ।"

आवाज सुनके उठलीं। नियरा जाके पुछलीं—"का कहत बानीं।"

"पानी।"

टनक बोली सुनके मन खुस भ गइल। गिलास में पानी ढार के पिआ देलीं। गिलास रखे जात रहीं त उनुकर बोली सुनलीं। जाके पुछलीं—"कुछ अउर चाहीं का?"

"खइनी।"

—अतना कहके ऊ चुपा गइले।

ताखा प से खइनी आ चुनवटी से चूना लेके हम खइनी बनावे लगलीं। ताखा पर ढिबरी जरत रहे। ढिबरी के देख के इयाद परल। ढिबरियो तेल खतम भइला प एक बेर खूबे अँजोर क के बुताला। कहीं इनिको साथे त उहे बात नइखे? आ हमार मन डर से कांप गइल। मन के एगो झटका देलीं—ना, ना……कवनो बात नइखे। ऊ जरूर अच्छा हो जइहें। आ उठके उनुका खटिया का भिरी गइलीं।

आवाज देलीं—"खइनी लिहीं।"

अतना सुनके ऊ आंख खोलले आ कहले—"ओठवा में जांत द।"

हम खइनी उनुका ओठ में जांत के कुछ देर ले खड़ा रहीं।

"बबुआ, तूं जाके आराम कर। हमार चिंता तूं छोड़ द। अब हमरा कुछऊ ना होई। जा सूत ग। हमरा के तनी निंचित सूते द।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतना कहके ऊ आँख मूँद ले ले।

उनुका मुँह से अपना खातिर 'बबुआ' शब्द सुन के हम चकचिहा गइलीं। ई सुबुद्धि इनका कहँवा से आइल! सायद हमार सेवा कइल देख के। मन में सोचलीं—चल, कम-से-कम अतना त भइल।.....आ हम रजाई ओढ़के सूत रहली। कई दिन से जागल रहीं, एह से तुरते नीन लाग गइल।

आँखि लगला का थोरे देर बाद हम देखलीं—"बाबू के बहुत से लोग घेर के पीट रहल बा। उनुकर कपार फाट गइल बा। समूचा देह खून से रँगा गइल बा।" —आ हमार नीन टूट गइल। हम उठ के उनुका खटिआ भीरी गइलीं। देखलीं ढिबरी का लगे बिछकुतिआ एगो फतिंगा के धइले बिया। फतिंगा भागे के कोसिस करत रहे। हम उनुका ओर देखलीं। ऊ एकटक से बिछकुतिआ का ओर देखत रहन।

हम पुछलीं—"कइसन तबीयत बा?"

ऊ कुछ ना बोललें।

संकालू मन संका से भर उठल। बिछकुतिया फतिंगा के खा गइल रहे। ढिबरियो फकफका के बुता गइल। हिरदेया कवनो असगुन के संका से काँप उठल। हम उनुकर नाड़ी टोवलीं। नाड़ी बन हो गइल रहे।

कउड़ा का नियरा बइठल हम पह-फाटे के इंतजारी करत रहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कायर

ऊ एक नजर जेल के भीतरी भाग प डललस आ छने भर में सउँसे जेल के जायजा ले लेलस। मने-मने सोचलस सरकार कतना खेआल राखले कैदियन के। रहे खातिर अतना सुन्नर मकान, सब चीज के सुविधा। अउर चाहीं का? अगर हमार बस चलित त सउँसे जिनगी एहिजे काट दितीं। इनार में चलत पम्प के देख के ऊ सोचलस—नहा लितीं त अच्छा होइत; काहें कि नहइला कई दिन भ गइल रहे। आ अपना मइल-कुचइल कपड़ा आ पसेना के महँक के इयाद आवते ओकर मन ओकाए-ओकाए हो गइल। ऊ सोचलस—नहा लितीं त ठीक रहे, तबहीं सिपाही के कर्कस आवाज सुन के ओकर धेआन टूटल।

ऊ सिपाही का ओर खिसिआ के देखलस आ फुसफुसाइल—एह सारन के बोलहूँ के तमीज ना होला।

—आ मने-मने सोचलस कि दू चमेटा धरा के कहो कि कम-से-कम बोले के तमीज त सीख। आ हाथ में लागल हथकड़ी के इयाद आवते ऊ मन मसोस के रह गइल। ऊ सिपाही का साथे-साथे चले लागल। राह में रसोई-घर में चढ़ल हंडन के देख के ओकर मन ललच गइल। सोचलस—चल, कम-से-कम भर पेट खाये के मिली नू, आ खूब आराम से रहबो करब। अचके में ओकर धेआन घरे का ओर चल गइल। माई आ बाबू के इयाद आवते ओकरा दूनों आँख के कोरन से मोती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टप्-टप् चू पड़ल। आ समाज के रीति-रेवाज प ओकरा बड़ा खीस बरल। ऊ एगो गंदा गारी देलस·····आ इहे कुल्हि सोचत आगे चलल जात रहे।

—बड़ी हरामी बा साई। आरे ओने का, 'सेल' के हवा खाये के बिचार बा का?

सिपाही के बोली सुन के ऊ ठमक गइल। किरोध में तनल मुट्ठी हथकड़ी के भार से लरक के रह गइल। ऊ अलचार, सिपाही का पीछे-पीछे चले लागल। सिपाही एगो केंवाड़ी खोल के कहलस—जो भीतर चल जो। आ केंवाड़ी बन क देलस।

ऊ भीतर में देखलस। पाँच-छव गो कैदी रहन स। ऊ अलगे एगो कोना में जा के बइठ रहल। बइठत-बइठत ऊ एके नजर में सब कैदियन के देख लेलस।

सब कैदी खुस लउकत रहन स। साइत ई सोच के कि चल एगो संघतिया त बढ़ल। बगल में बइठल दूगो कैदी अपना-अपना बीरता के इतिहास के बरनन एक दोसरा से बड़ा सानदार ढंग से करत रहन स। ओकनी के बात सुन के ओकरा बुझाइल जे आज के जवाना में पढ़ल-लिखल आ सीधा आदमी के कवनो कदर नइखे। सगरे रुपचन के चलती बा।·····आ ऊ बुदबुदाइल—विनय कुमार, बी० एस० सी० इन्जिनीयरिंग (गोल्ड मेडलिस्ट)—कतना उमेद रहे ओकरा एह डिग्री प, बाकिर इहँवा सब बेकार हो गइल।·····आ ओकरा अपना ऊपर खीस बरल—अतना पढ़ला के का फायदा। कम पढ़ल-लिखल रहतीं त कहीं कुरी-कवाड़ी के काम क के कम-से-कम आपन गड़हा त भरतीं।····आ ओकरा बुझाइल जे ई डिग्री आज ओकरा गरदन के फँसरी बन गइल बा।·····भीतरे-भीतरे ओकरा एगो अकबकाहट के अनुभव भइल····· आ ओकर मुट्ठी समाज के सरल-गलल व्यवस्था के विरोध में किरोध से तन उठल। ऊ मने-मने एगो भद्दा गाली देलस।

टन्···टन्···टन्···

जेल के घड़ी दस बजा चुकल रहे।

सब कैदी सूत गइल रहन स। ओकरा आँख के नीन ना जाने कहाँ चल गइल रहे। ऊ सूते के कतना उतजोग करत रहे, बाकिर नीन ना आवत रहे। आँख मुँदला पर पछिला बात ओकरा आँख के आगा सिनेमा के रील-अइसन घूमे लागत रहे। घरे से बाहर ले सब लोग ओकरे के बधाई देत रहे। माई आ बाबू के त अइसे कारू के खजाना मिल गइल रहे। हेडमास्टर साहेब कहले रहन—"विनय, तूने स्कूल का नाम रौशन कर दिया।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई सुनते ओकर देहें खीसी भूत भ गइल। ऊ किरोध में कहले रहे—पता ना मास्टर साहेब, कवना पाप का चलते गरीब का घर में जनम लेलीं। दोसर गलती भइल कि पढ़े खातिर उहँवा गइलीं जहाँ बड़ लोगन के ठाट रहे।—कहत-कहत ओकरा दूनो आँखिन के कोर पर लोर मोती-अइसन झलमला आइल रहे। पता ना खुसी के रहे कि दुख के।

मच्छड़ के कटला से ओकर धेआन टूटल। ऊ एक बेरा गुमसुम ठाड़ देवाल का ओर देखलस। देवाल प पसरल करिआ-करिआ दाग आ सन्नाटा ओकरा के काटे लागल। हवा के एगो ठंढा झोंका आइल। ओकर सउँसे देह सिहर गइल। ऊ अपना के कमर में पूरा तरे लपेट के, गुलटिआ के बइठ गइल।

खट... खट...खट .....

सिपाही ओसारा में चक्कर काटत रहे। बूट के आवाज दूर होते ऊ बिचारन का गहिड़ समुन्दर में डूबे-उतराये लागल—ओह घरी ऊ छात्रावास में रहत रहे। कबहीं-कबहीं घरे जात रहे। घरे गइला प साथी-संघतिया बोल बोलस—बाप के नाँव साग-पात बेटा के नाँव परोरा।—आ हम सुन के चुपखाप रह जात रहीं। एक दिन मेस में से खा के ऊपर का ओर जात रहीं तबहीं मन अनियासे घर का ओर चल गइल। आ आँख का आगे ठंढ से ठिठुरल गोड़न में फाटल बेवाय आ बिगुरिआइल बाबू-माई के चेहरा छन-भर में घूम गइल। ... .आ तबहीं आँखिन का आगा बलदेव पंडित के चेहरा घूम गइल रहे। आ ओकर मन एगो अनजान डर से काँप उठल रहे। पता ना काहें उनुकर इयाद आवते ऊ डेरा जाला ..... उनुकर मोट ओठ के बीचे भरल खइनी के इयाद आवते ओकर मन भिनभिना उठल। ओह दिन रात-भर ओकरा ठीक से नीन ना आइल रहे।

टन ..... टन ... टन .....'टन...

बारह बजत रहे। ऊ एक नजर दुआरी का बहरी डललस। बाहर अन्हरिया के करिआ पहाड़ ठठा के हँसत खाड़ रहे। ओकर मन भीतरे-भीतरे काँप गइल। ऊ आपन नजर दुआरी का ओर से हटा लेलस। बत्ती का चारू ओर फतिंगा उड़त रहन स। फतिंगन के पर टूट गइला से ढेर फतिंगा एने-ओने अलचार घूमत रहन स।.....आ आपन धेयान आवते ओकर सउँसे देह पीपर का पतई अइसन काँप गइल। आ ओकरा इयाद आइल — 'थर्डइयर' पास कइला का बाद माई कहले रहे—बबुआ अब त तू एक-दू साल में पास करिए जइब। अब बिआह क लेत त हमार करेजा जुड़ा जाइत। हम निचित हो जइतीं।

हम कुछ ना बोललीं। माई के दिल कइसे तूरीं!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिआह भइल । कनिया घरे अइली । माई के करेजा त जुड़ा गइल, बाकिर हमरा करेजा प एगो बोझा लदा गइल जवन गँवें-गँवें अउर बढ़ते गइल । बाबूजी के मरला का बाद त ऊ बोझा पथल के चकरी अस हमरा करेजा प बइठ गइल, जवन टस-से-मस ना होखे । दाढ़ी के हुगुअइला से ओकर हाथ अनियासे दाढ़ी का ओर चल गइल । दाढ़ी बढ़ गइल रहे । कतने दिन 'नहइला भइल रहे, एह से दाढ़ी पसेना से चट्-चट् करत रहे·····आ तबहीं हमरा आँखिन का आगा एगो भकसावन, भेआवन दइँत के चेहरा घूम गइल । नंग-धड़ंग देह पर रामनामा के चादर आ सउँसे लिलार प चन्नन के लेप । मिसिरो अस मीठ बोली, बाकिर भितरी से बइर के बिआ अस कठोर—बुटाई सिंह । बाबू के मुअला अबहीं आठो दिन ना भइल रहे कि ऊ बलदेव पंडित के साथे ले के हैंननोट नया करावे खातिर आ गइल रहन । ····· ई सुन के ओकर एड़ी से कपार ले जर गइल । ओकर हाथ बुटाई सिंह का गरदन के ओर बढ़ गइल रहे । ····बलदेव पंडित का कहला पर ऊ चुपचाप हैंननोट प दसखत क देले रहे ।

बेटा, अब तें पढ़ल-लिखल छोड़ु । दिन-दुनिया के अनुभव ले—पंडित जी मलहम लगावत कहलन ।

उनुकर बात सुन के ओकरा बड़ा खराब लागल । ऊ कुछ ना बोलल ।

टन्···टन्···टन्···

दू बज गइल रहे । ओकरा दिमाग में बिचारन के लहर समुन्दर के लहर-अइसन उठत आ गिरत रहे । ऊ सूते के उतजोग करत रहे, बाकिर पीछे के सब बात ओकरा इयाद परे लागल ।—इन्जीनियरिंग के इम्तिहान में ऊ इनवरसिटी भर में अउवल आइल रहे । रिजल्ट देख के त ऊ भोरे पहर ले आपन सब दुख-दरद भुला गइल रहे । आ अपना माई के मुँह प ऊ गजबे निचिंतता देखले रहे । आ दुलहिन के त जइसे कुबेर के भंडारे मिल गइल रहे ।····· हमहूँ सोचलीं चल, अब दुख के दिन कट गइल, बाकिर ई भरम बहुत जल्दिए टूट गइल । कहीं नोकरी ना मिलल । आपिसन के दुआरि प नकदरिया करत-करत मन उबिया गइल । कहीं जाति के नाँव प, कहीं रुपचन के कमी का कारन, छाँट देल जात रहीं । हम हार गइल रहीं । माई हमेस ढाढ़स देत रहे, बाकिर ऊ भीतरे से टूट गइल रहे । एक दिन ऊहो साथ छोड़ देलस । माई का मरला के इआद आवते ओकरा आँखिन के आगे बलदेव पंडित आ बुटाई सिंह के चेहरा नाच गइल । आ ऊ भीतरे-भीतर एगो अनजान डर से काँप उठल । ····· ओकर सउँसे देह पसेना में बोथा गइल रहे । ऊ अपना के कमर में लपेट के सूते के उतजोग करत रहे । रात भर जगला के कारन ओकरा आँख लाग गइल ।

आँख लगला प ऊ देखलस—एगो कैदी ओकरे घेर के बइठल बाड़ें स । ऊहो चुपचाप उन्हनिये के देखत रहे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एगो कैदी पुछलस—कवना कारन से इहाँ अइल ह राजा। आ ओकरा बोले का पहिलहीं एगो दोसर कैदी कहलस—अरे प्यार-वार के चक्कर में आइल होइहें। देखत नइख, कइसन मजनू अस मुँह बनवले बाड़न।

ई सुन के ओकर चेहरा तामा-अस लाल हो उठल। मन में सोचलस—पता ना कब एह कमीनन से पिंड छूटी।

एगो बूढ़ कैदी पीठ थपथपावत पुछलस—बेटा, तूँ कवना जुर्म में इहाँ आइल बाड़।

—आत्म-हत्या का जुर्म में।

ई सुनके बुढ़वा का आँखि के डोरा लाल टेस हो गइल। ऊ कहलस—आतम-हतिया आ एह जवानी में! कवना कारन?

—हम कहलीं, दोसर उपाय का रहे। इनवरसिटी में अउवल अइलीं, बाकिर रुपचन के अभाव में बेकार हो गइलीं। माई दवाई बिना मर गइल। फूल अइसन कोमल बेटा भूखे छटपटा के दम तूर देलस। आखिर उपाय का रहे। बोल ना बूढ़े बाबा। चूप काहें हो गइल।

तबहीं बुढ़वा आपन लाल आँख उठा के कहलस—छीः, छीः, धिरकार बा तोहरा जवानी के। तूँ बहुत डरपोक बाड़।

आ ओकरा बुझाइल जइसे कैदियन के चेहरा धीरे-धीरे माई, बेटा, बेटी आ मेहरारू के चेहरा में बदल रहल बा। आ ऊ सब ओकरा के घेर के खड़ा बाड़न स आ कहत बाड़न स—हँ, हँ, तें कायर हवे, डरपोक हवे। कायर हवे। डरपोक हवे।

आ ऊ चिचिआइल—हँ, हँ, हम कायर हईं, डरपोक हईं, नपुंसक हईं काहें कि हम पढ़ल-लिखल बानीं, सभ्य बानी आ ओकर नीन टूट गइल।

सामने जमीन प, कोठरी का अन्हरिया के चीरत, एगो सोनहुला धाम के टुकड़ा किलकारी मारत रहे।

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृष्णानन्द कृष्ण

जेकर जनम भोजपुर जिला (बिहार) के चाँदी (नरही-चाँदी) गाँव में २ जुलाई, १९४७ के भइल। बचपन गँवई के परिवेश में बीतल। विज्ञान पढ़के अभियन्ता के पेशा अपनावे के पड़ल, बाकिर मन के भँवरा साहित्य के फुलवारी में मँड़राते रह गइल, जवना के गुनगुनाइल कविता हो गइल आ चुआइल कहानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection